सफलता के सात वर्ष

वर्ष 7, अंक 11 इलाहाबाद अगस्त 2008

विश्व स्नेहसमाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

कीमत 5 रुपये

चार कहानियां

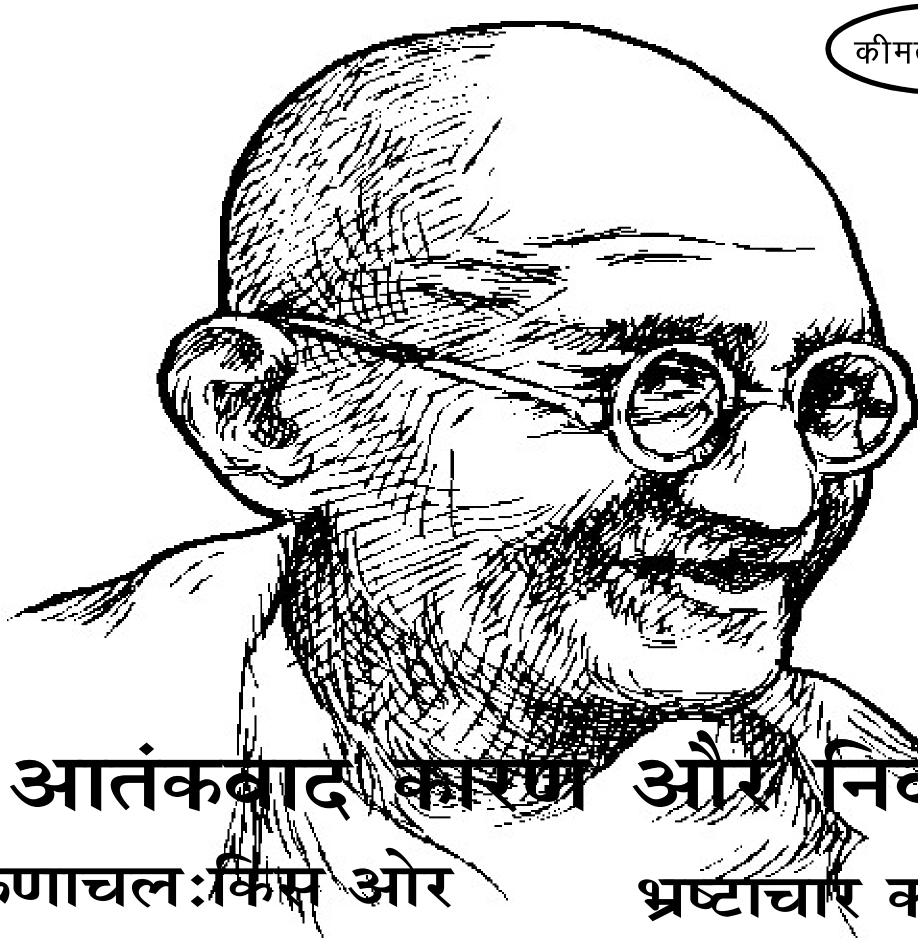

आतंकवाद कारण और निवारण

अरुणाचल:किस ओर

भ्रष्टाचार का वाईरस

केचुंए की खादः वर्मी कंपोस्टिंग

जन्म दिवस की हार्दिक बधाईयां	जन्म दिवस की हार्दिक बधाईयां
डॉ० तारा सिंह वरिष्ठ उपाध्यक्ष, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एवं निदेशक, स्वर्ग विभा	**डॉ० विनय कुमार मालवीय** सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार

रचनाएं आमंत्रित है

ए आग कब बुझेगीः

इसमें आरक्षण/भ्रष्ट्राचार/दहेज/जातिवाद/नारी शोषण/ राजनीति से संबंधित आलेख/कविताएं/ कहॉनिया/लघुकथाएं/व्यंग्य रचनाएं/संस्मरण आमंत्रित है. इस बात विशेष ध्यान रक्खें कि रचनाएं १५०० शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा २५०/-रुपये अथवा दो रचनाएं ५००/- रुपये सहयोग राशि के साथ

अंतिम तिथि : ३० दिसम्बर २००८

के साथ आमंत्रित है. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें/भेजें-आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. 538702010009259 में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है.

प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

अपने काव्य संग्रह, कहॉनी संग्रह, आलेख संग्रह आदि प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षणः

१.मात्र लागत मूल्य पर
२.विक्री की व्यवस्था
३.प्रचार प्रसार की व्यवस्था
४.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

कल, आज और कल भी उपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्षः८ अंकः१अक्टूबर ०८, इलाहाबाद

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, इलाहाबाद

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रति: रु०५/–
वार्षिक: रु० ६०/–
विशिष्ठ सदस्य:रु० १००/–
द्विवार्षिकसदस्य:रु०११०/–
पाच वर्ष–रु०२७०/–
आजीवन सदस्य: रु०१००१/–
संरक्षक सदस्य:रु० २५००/–

अंदर के पन्नों में:

प्रशासन की कृपा से धड़ल्ले से चल रहे हैं अवैध स्थानीय टीवी चैनल 06

जहर उगलते कारखानों पर कोई पाबंदी नहीं 08

भोपाल गैस काण्ड की राह पर कनोरिया केमिकल्स 10

अपनी बात –	04
प्रेरक प्रसंग –	05
जनता ने खीची कुर्सी –	07
मोबाइल के खतरे–	07
परिचर्चा–	09
कहॉनी–स्वतंत्रता यानि–	11
महानतम महान निराला जी–	13
हंसना मना है–	19
गंगा ग्लेशियर–	19
व्यक्तित्व–	20, 21
अध्यात्मः गंगा की पावनता में वृद्धि–	21
कहॉनीः चुटकी भर नमक–	15
कुछ खास–	22
स्नेहबाल मंच–	24
कविताएं–	12, 17, 18, 23, 26
साहित्य समाचार–	22, 24, 26, 27
स्वास्थ्य–	27
चिट्ठी आई है–	28
लघु कथाएं–	30
पुस्तक समीक्षा–	31

अपनी बात

क्यों चुप साध रही बलवाना

लंका पर चढ़ाई करते समय जब हनुमान जी निराश बैठे थे तो उन्हें भी उनके बल की याद दिलानी पड़ी थी. हमारे अच्छे बुरे सभी कार्यो पर लोगों की प्रतिक्रिया होती है. अधिकतर प्रतिक्रियाएं नकारात्मक होती है. कुछ ही लोग कहते है कि करो कैसे नहीं होगा. हम सब साथ है. तुम क्यों नहीं कर सकते. ये शब्द इंसान को आत्मबल प्रदान करते है. अगर कोई निम्न मध्यम वर्गीय परिवार या गरीब परिवार का सक्स बड़ा काम करने की सोचता है तो उसका तो मजाक बना लेते है. अगर पंडित महामना मदन मोहल मालवीय यह सोच लेते कि मुझ जैसा आदमी कहां इतना बड़ा विश्वविद्यालय बना पाएगा तो आज बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय न होता. ऐसा नही है कि उनके समय में लोगों ने नकारात्मक प्रतिक्रियाएं न दी हो, कमेंट न कसे हो. लेकिन वे लोगों की बातों का परवाह किए बिना अपना कार्य करते रहे. अंततः गुलामी के समय में उन्होंने उतना बड़ा लक्ष्य हासिल किया. हम अच्छे कार्यो के लिए कदम तो आगे बढ़ाते है लेकिन लोगों की नकारात्मक प्रतिक्रियाओं से डर जाते है और परिणाम वहीं ढाक के तीन पात. बने बनाए रास्तें पर चलने लगते है. सबसे अधिक जरुरी यह है कि आप यह मान लीजिए आपके काम में, आपके लक्ष्य में आपका कोई साथ न देगा, आपको अकेले ही अपने लक्ष्य को हासिल करना है, तो आप निश्चय ही लक्ष्य को हासिल करोगे. ठीक विपरित अगर आपने दूसरे के भरोसे काम आगे बढ़ाया तो आपकी असफलता निश्चित है. लोगों की निराशा भरी प्रतिक्रियाएं सुनने के बजाए कान में रुई ढूंस ले. अगर किसी बहरे व्यक्ति को कोई काम कह दो, अगर वह उस काम करने को इच्छुक है तो वह अवश्य ही कर लेगा क्योंकि उसे लोगों की प्रतिक्रियाएं सुनायी नहीं पड़ेगी. हमें भी नकरात्मक प्रतिक्रियाओं को अनसूना कर अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ना होगा. तभी सफलता आपके कदम चुमेंगी.

जीवन एक संघर्ष है, अगर जीवन में कुछ करना है, आगे बढ़ना है तो निराशा के स्वर सुनने ही बंद कर दें. जब हम यह सुनने लगते है कि लक्ष्य बहुत बड़ा है, तो हमारी हिम्मत टूट जाती है. १९९९ में मैंने स्नेह पत्रिका को निकालने के संदर्भ में अपने दोस्त के भाई से वार्ता की. उन्होंने कहा ‘जब हमारे जैसा आर्थिक और सामाजिक रुप से सम्पन्न व्यक्ति दो-तीन अंक निकालकर बंद कर दिया तो तुम कैसे पत्रिका निकालोगे. बहुत ही कठिन कार्य है. ये सब छोड़ो, पैसा कमाना है तो मेरे साथ जुड़ जाओ.’ मैंने कहा सोचते है.

मैंने दृढ निश्चय किया कि पत्रिका निकालूंगा चाहे जैसे भी हो. मैने मई ९९ में त्रैमासिक रुप में निकालना प्रारम्भ किया. धीरे-धीरे २००१ में इसे मासिक कर दिया और प्रकाशन के आठ वर्ष पूर्ण होने पर यह अंक लेकर आपके सामने हाजिर हूँ. मैं पत्रिका का प्रत्येक अंक अपने दोस्त के भाई, या उन जैसे अन्य लोगों को जिन्होंने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी थी को अंक देना नहीं भूलते. अब तो वे आजीवन सदस्य है. वो कहते है-‘द्विवेदी मैं अपनी हार मानता हूँ. लेकिन इसके पीछे राज क्या है. कहॉ से पैसे एकत्र करते हो. मैं कहता यह तो मुझे भी नहीं मालुम कि अगला अंक कैसे छपेगा और छप जाता है. यह इतिहास बार-बार दोहराया जाता है. मैं एक अंक छपते ही दूसरे अंक की तैयारी में भीड़ जाता हूँ अंक छपते है और छप रहे है. आज इस पत्रिका के देश में ही नहीं विदेशों में भी सदस्य है. यह मेरा दृढ़ निश्चय, लोगों की नकारात्मक प्रतिक्रियाए अनसुना करने का ही परिणाम है.

अगर देखेंगे तो हजारों उदाहरण ऐसे मिल जाएगें जो यह दर्शाते है कि जिसने भी नकारात्मक प्रतिक्रियाओं को नकार कर, दृढ़ लक्ष्य निर्धारित कर लिया वो सफल रहे. हमारे अंदर किसी भी कठिन से कठिन कार्य को करने की अदभूत क्षमता है. अगर अपने बल को, अपनी शक्ति को पहचाने तो कोई भी लक्ष्य मुश्किल नहीं है. हमें नयी पीढ़ी के युवाओं को भी अच्छे कार्यो के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे समाज में प्रेरणा, जागृत का संचार होगा. निराशा भरे शब्दों, विचारों को समूल नष्ट कर दीजिए. मंजिल, सफलता आपका लक्ष्य आपके कदमों तले होगा.

जब हम किसी कर्म को अपना लक्ष्य बना लेते है तब हमारे मार्ग में स्वतः ही रोड़े आने लगते है, चारो तरफ से आक्रमण होने लगते है. अपने-पराये सब बाधा खड़ी करते है. जिससे हमारे अंदर हीन भावना का संचार होता है. असफल लोग तो अवश्य ही बांधा पहुंचाएगे. लेकिन इन सबकी बातों को अनसूना करते हुए अपने कदम को आगे बढ़ाये जाओ. हो सकता है कि कार्य की प्रगति धीमी हो. अंत में मैं केवल इतना ही कहूंगा कि दुष्यंत कुमार की इन पक्तियों से सीख लीजिए-

कैसे आकाश में सुराक नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो।

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रेरक प्रसंग

स्तम्भः क्या करें, क्या न करें

मकान नहीं, घर बनाइयेः हम लोग घर नहीं मकान बनाते है, जबकि हमें घर बनाना चाहिए. इसी षहर में एक छोटा सा किराये का मकान है. करीब पन्द्रह वर्श से आना जाना है. दो छोटे कमरे एवं बहुत ही छोटा सा रसोई घर. बाथरुम बाहर की तरफ और रहने वाले हैं पति-पत्नी व दो बेटियाँ. उस परिवार में जब भी जाइए सुमधुर व्यवहार मिलेगा. सबके चेहरों पर प्रसन्नता एवं स्वागत स्पश्ट दिखेगा. सीमित आय में इतनी कम जगह में एक मध्यमवर्गीय परिवार का इतना प्रसन्न रहना स्पश्ट दिखाता है कि प्रसन्नता का धन या बड़े मकान से कोई सम्बन्ध नहीं है. लोग आसानी से मकान तो बना लेते हैं पर घर बनाने के लिए मन के अन्दर का संतोश होना आवष्यक है.

डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++

राष्ट्रभाषा के प्रति अद्‌भूत-प्रेम

हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है, लेकिन क्या देशवासियों में इसके प्रति वही समर्पण भाव है, जो कि राष्ट्रभाषा के प्रति वहाँ के नागरिकों में होना चाहिए?

स्वतन्त्रता के ६० वर्ष बाद भी अंग्रेजी का प्रभुत्व दिखायी दे रहा है, नागरिक अंग्रेजी बोलने में शान समझते है. डॉ. पट्टाभि सीतारमैयया अपने सभी पत्रों पर हिन्दी में पता लिखते थे, उस समय दक्षिण भारत में डाक विभाग के पास हिन्दी जानने वाले डाकिया नहीं थे.

डाक विभाग ने उनसे निवेदन किया कि वे पत्रों पर पते अंग्रेजी में लिाखा करें, ताकि डाक विभाग को असुविधा न हो.

डॉ० सीतारम्मैया ने डाक विभाग को लिखा कि वे पते हिन्दी में ही लिखेंगे, हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, और वे इसका प्रयोग करेगे.

डाक विभाग ने उन्हें चेतावनी देते हुए लिखा कि अगर वे पत्रों पर हिन्दी में पते लिखने का हट करेंगे तो उनके पत्र 'डेड लेटर आफिस में भेज देंगें' जब निरन्तर हिन्दी में पते वाले पत्र आने लगे, तब विभाग ने मछलीपट्टम डाकघर में एक हिन्दी जानने वाले कर्मचारी को नियुक्त किया. <u>दर्शन सिंह रावत, राजस्थान</u>

+++++++++++++++++++++++++++++++++

वंश वृद्धि को पुत्र

कौन से प्रकारा के पुत्र पितरों का उद्धार करने के लिए वंश वृद्धि कर सकता है. मनुस्मृति के अनुसार धर्मशास्त्र में बारह प्रकार के पुत्रों का वर्णन है. सुने-

१. औरस पुत्र- पति द्वारा अपनी व्याहता पत्नी से उत्पन्न
२. पुत्रि का पुत्र- दोहित्र
३. क्षेत्रज- अपनी से दूसरे पुरुष से उत्पन्न कराया गया
४. गुढ़ज-पत्नि को छोड़ अन्य स्त्री से उत्पन्न
५. कानीन- अविवाहित कन्या से उत्पन्न
६. महोढ़-विवाह के समय गर्भवति कन्या से उत्पन्न
७. पौनभर्व-दुबारा विवाहित पत्नि से उत्पन्न
८. दत्तक-पुत्र भाव से अन्य सजातीय परिवार से लिया हुआ
९. क्रत- अन्य सजातीय से खरीदा हुआ
१०. स्वयंदत्तक-माता पिता से परित्यक्त
११. कृत्रिम-स्वेच्छा से सजातीय से पुत्रवत लिया हुआ
१२. अपवित्र-कहीं पड़ा हुआ प्राप्त

मोहन लाल मगो, दिल्ली-११००६१

++++++++++++++++++++++++++++++++++

अगम अगोचर हे अनादि आदि अन्त अज्ञात,
कण में, अणु में, जड़ जीवन में तुम ही तुम हो व्याप्त। रहे कल्पना लोक में जीवन से अनभिज्ञ जीवन वृत में फँस गए बनते जो मर्मज्ञ।।

गर्म राख से ढंक गई चिन्गारी कुछ ढेर
वायु चली तो बन गई विकट ज्वाला का ढेर।

++++++++++++++++++++++++++++++++++

कुछ अनमोल वचन

जो अकेला खाता है वह पापमय है.

ऋगवेदं

तुम्हें मन में विषाद नहीं करना चाहिए, क्योंकि विषाद बहुत बड़ा दोष है.

बाल्मीकि रामायण

शंका के मूल में श्रद्धा का अभाव रहता है.

महात्मा गांधी

श्रद्धा बीज है, तप वर्षा है.

सुत्त निपात

सम्पत्ति से नहीं, सद्‌बुद्धि और सद्‌प्रवृतियों से असली उन्नति होती है.

श्रीराम शर्मा आचार्य

पी.एस.भारती, बरेली, उ०प्र०

मुद्दा

प्रशासन की कृपा से धड़ल्ले से चल रहे हैं अवैध स्थानीय टीवी चैनल

■ अवैध स्थानीय टीवी चैनलों का मजेदार पहलू यह भी है कि मनोरंजन कर विभाग और जिला प्रशासन के पास इन टीवी चैनलों को चलाने वाले मालिकों और तथाकथित पत्रकारों की न कोई सूची है न कोई जानकारी है. इन अवैध पत्रकारों के हाथों में ये पूरा शहर बारुद के ढेर पर रखा हुआ है. इनकी लापरवाही से कही भी कोई भी चिंगारी भड़क सकती है.

✍**वी. वैभव,** सचिव, 'पोल खोल'
भ्रष्टाचार उन्मूलन अभियान, इलाहाबाद

भ्रष्टाचार की गंगा में आकंठ डूबे मनोरंजन कर विभाग की नाक के नीचे नियम-कानून को ठेंगा दिखाकर छोटे-बड़े शहरो में इलेक्ट्रानिक मीडिया के तथाकथित स्वयंभू पत्रकार अवैध स्थानीय चैनलों के जरिये गैर जिम्मेदारी के साथ बिना सेन्सर के संवेदनशील मामलों का टीवी प्रसारण धड़ल्ले से कर रहे है और सम्बधित जिले के जिलाधिकारी एवं मंडलायुक्त इस अवैध कार्य देखकर भी मूकदर्शक बने हुए है.

केबल टीवी प्रसारण एक्ट के अनुसार, केबिल आपरेटरों को केवल उन्हीं राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय टीवी चैनलों के सिग्नलों के प्रसारण का अधिकार है जिन्हें वे सेटेलाइट के जरिये रिसीव करते है तथा केबिल आपरेटर उन सिग्नल्स को प्रसारित करने का अधिकार रखते है जिन्हें सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा जारी लाइसेंस के तहत प्रसारण की अनुमति दी गयी है. केबिल टीवी एक्ट में केबिल आपरेटरों को कन्ट्रोल रुम में प्रसारण के लिए कम्प्यूटर, वी.सी.आर., वी.सी.पी., सीडी प्लेयर अथवा कोई और प्रसारण कर्ता यन्त्र के उपयोग करने की अनुमति नहीं है और अगर कोई केबिल आपरेटर ऐसा करता हुआ पाया जाता है तो उस पर कानूनी कार्यवाही के साथ दण्ड देने का प्रावधान भी है.

जाहिर है समुचित प्रसारण लाइसेंस के बिना कोई व्यक्ति अथवा संस्था न तो अपना निजी टीवी अथवा रेडियो चैनल चला सकता है और न ही सेन्सर के बिना किसी सामग्री का प्रसारण कर सकता है.

लेकिन आश्चर्य है कि मनोरंजन कर विभाग एक लम्बे समय से अवैध स्थानीय टीवी चैनलों के प्रसारण को अनुमति दिए हुए है और इस विभाग की नजर में साफ लगता है कि प्रसारण संबंधी नियम कानूनों की कोई अहमियत नहीं रह गयी है. मौजूदा समय में शहर में १० से १५ के बीच अवैध स्थानीय चैनल डंके की चोट पर चलाये जा रहे है. केबिल आपरेटर्स ने इन अवैध चैनलों के प्रसारण के अधिकार, नियम कानून की ऐसी-तैसी करके अवैध रुप से शहर के तमाम इलेक्ट्रानिक मीडिया के तथा कथित पत्रकारों को दे दिये है और ये केबिल आपरेटर अवैध चैनल मालिको से १५ से २० हजार रुपये प्रतिमाह बकायदा बिना किसी लिखा-पढ़ी के वसूल कर रहे है. बेशर्मी इस हद तक है कि कई स्थानीय केबिल नेटवर्क तो चार-पांच की संख्या तक अवैध स्थानीय टीवी चैनलों को प्रसारण की अनुमति दिए हुए है और इस अवैध स्थानीय टीवी चैनलो को प्रसारण की अनुमति दिए हुए है और इस अवैध सेवा के बदले मोटी रकम कमा रहे है. इस कमाई पर पे केबिल नेटवर्क मनोरंजन कर विभाग को प्रतिमाह लाखो रुपये राजस्व चूना लगा रहे है. मनोरंजन कर अधिकारी और इस तरह के अवैध कारनामों को रोकने के लिए सिलसिले में लगाये गये इन्सपेक्टरों को उनका हिस्सा पहुँचाया जा रहा है इसलिए ये चुप्पी साधे हुए है. कहा तो यहॉ तक जा रहा है कि इस अवैध काम के संचालन के लिए जिले के मुखिया की मौखिक स्वीकृत है.

अवैध स्थानीय टीवी चैनलो का मजेदार पहलू यह भी है कि मनोरंजन कर विभाग और जिला प्रशासन के पास इन टीवी चैनलों को चलाने वाले मालिको और तथाकथित पत्रकारों की न कोई सूची है न कोई जानकारी है. इन अवैध ा पत्रकारों के हाथों में ये पूरा शहर बारुद के ढेर पर रखा हुआ है. इनकी लापरवाही से कहीं भी कोई भी चिंगारी भड़क सकती है.

जरा सोचिये कल को अगर इन अवैध स्थानीय टीवी चैनलों के किसी गैर जिम्मेदाराना प्रसारण से कहीं दंगा भड़क जाय तो जिला प्रशासन किस व्यक्ति के खिलाफ कार्यवाही करेगा. केबिल आपरेटर तो पल्ला झाड़ लेगे और यही कहेंगे कि वे ऐसा कर ही नहीं रहे थे.

सवाल उठता है कि जिला प्रशासन ने किस नियम-कानून के तहत इन तथाकथित अवैध स्थानीय टीवी को कार्यक्रमों और समाचार के प्रसारण की अनुमति दी है? और अभी तक अगर कोई अनुमति नहीं दी है तो स्थानीय टीवी चैनलों के अवैध प्रसारण के खिलाफ प्रशासन ने एक्शन क्या `लिया? क्या इसलिए कि इन अवैध

स्थानीय टीवी चैनलों में प्रशासन के आला अधिकारियों के चेहरों को दिखाया जाता है और ये अवैध टीवी चैनलो के प्रसारण में हीरो होते है.

इतना ही नहीं, जिला प्रशासन के पास इन अवैध स्थानीय टीवी चैनलों में कार्यरत लोगो की जानकारी क्यों नहीं है?

आश्चर्य तो इस बात का है कि छोटी-छोटी गलतियों पर केबिल आपरेटरों के खिलाफ आरसी काटने वाले मनोरंजन कर विभाग ने यह जानकर भी कि ये स्थानीय अवैध टीवी चैनल विज्ञापनों का प्रसारण करके लाखो रुपये प्रतिमाह की कमाई कर रहे है, अभी तक इनसे कर की वसूली क्यों नहीं की? सरकार को प्रतिमाह होने वाले इतने बड़े राजस्व के नुकसान के लिए कौन जिम्मेदार है और इसकी भरपायी कैसे होगी?

क्यों न यह माना जाय कि अवैध स्थानीय टीवी. चैनलों के धंधे में जिला प्रशासन, मनोरंजन कर विभाग, केबिल आपरेटर्स, चैनल मालिक और तथाकथित इलेक्ट्रानिक मीडिया के पत्रकार सभी लिप्त है और ये सभी मिल-जुलकर इस धंधे को अपने फायदे के लिए पाल-पोस रहे है और सरकार को राजस्व का चूना लगा रहे है.

काबिले गौर है यह प्रयास

जनता ने खींची कुर्सी

रायपुर, छ.ग.काम से जी चुराने वाले भ्रष्टाचार में लिप्त महानुभावों के लिए अब चेत जाने का समय आ गया है. देश के इतिहास में पहली बार छत्तीसगढ़ के दो जिलों की जनता ने मतदान के जरिए तीन नगर पंचायत अध्यक्षों की कुर्सी वापस खींच ली है. जाहिर अब काब नहीं करने वाले जनप्रतिनिधियों को कुर्सी नहीं मिलेगी. राज्य के दुर्ग जिले में नवागढ़, गुंडरदेही और अंबिकापुर नगर पंचायतों के अध्यक्षो को जनता ने हटा दिया है.

जनप्रतिनिधियों के खिलाफ १६ जून २००८ को कराये मतसंग्रह के नतीजे १७ जून २००८ को घोषित किए गए. यह भी महज संयोग ही है कि अभी १३ जून को ही लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी ने तिरुवनंतपुरम में कहा था कि काम नहीं करने वाले और दुर्व्यवहार करने वाले सांसदों और विधायको को वापस बुलाने का अधिकार मतदाताओं को मिलना चाहिए. छत्तीसगढ़ की नगरपालिका अधिनियम १६१ की धारा ४७ के मुताबिक अगर नगर पालिका के तीन चौथाई चुने हुए प्रतिनिधि नगर निगम के अध्यक्ष को हटाने के लिए जिलाधिकारी को लिखित में अर्जी देते है. राज्य सरकार चुनाव के लिए राज्य चुनाव आयोग को प्रस्ताव भेजती है. मतपत्र पर दो कुर्सियों के निशान होते है. एक कुर्सी पर किसी व्यक्ति को बठे हुए दिखाया जाता है जबकि दूसरी कुर्सी खाली होती है. अगर मतदाता चुने हुए प्रतिनिधि को वापस बुलाना चाहता है तो उन्हें खाली कुर्सी पर मुहर लगानी होती है.

इसी अधिनियम के तहत मतदान कराया गया. गुंडरदेही नगर पंचायत अध्यक्ष भारती सोनकर के खिलाफ पार्षद लंबे समय से अभियान छेड़े हुए थे. उन पर राजनीतिक वजहों से विकास कार्यो में बाधा डालने और भ्रष्टाचार के आरोप लगाए जा रहे थे.

मोबाइल के खतरे!

आधुनिक प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को सरल बनाया है, हालांकि उसके जोखिम भी कम नही है. मोबाइल इसकी सबसे ताजा नजीर है. इस तकनीकी उपलब्धि ने भौगोलिक फासलों को भले ही मुट्ठी में समेटा हो, लेकिन साथ ही उसने हमारे सामाजिक ताने–बाने को भी गंभीर नुकसान पहुंचाया है. और इसे एमएमएस कांडो के एक अंतहीन सिलसिले में देखा जा सकता है. दुर्योग से अब सेहत पर उसके खतरनाक असर के खुलासे हो रहे है. हालांकी अभी किसी निष्कर्ष की अंतिम रुप से मुनादी नहीं हुई है, लेकिन शोध के क्षेत्र में हमसे उन्नत मुल्कों से छनकर आने वाली अनेक खबरों के बाद अब केंद्रीय दूर संचार मंत्रालय ने मोबाइल कंपनियों को जो हिदायते जारी की है, उससे यही जाहिर हुआ है कि मोबाइल के इस्तेमाल के दौरान

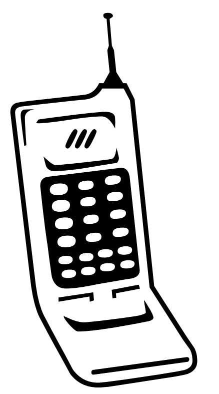

इससे निकलने वाली इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगे दिमाग के टिश्यू को क्षतिग्रस्त करती है. और चूंकि इसका असर गर्भवती महिलाओ, बीमारों और बच्चों पर सबसे अधिक घातक हो सकता है. लिहाजा मोबाइल कंपनियां अपने विज्ञापनों में गर्भवती महिलाओं और बच्चों को न दिखाए. सरकार की चिंता को यदि एहतियाती भी माने, तब भी इसकी सराहना की जानी चाहिए.

++++++++++++++++++

मुद्दा

जहर उगलते कारखानों पर कोई पाबंदी नहीं

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तो केवल फार्मेल्टी के नाम पर मोटी वसूली करता है

✍अजय कुमार जौहरी, सोनभद्र

देश की प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डाला जाये तो प्रदूषण एक प्रमुख समस्या के रुप में उभरता है, जो कि गांव खलिहानों में कम शहरो की प्रमुख समस्या बनती जा रही है. प्रदूषण हमारे मानव जीवन को तीन रुपों में जलवायु एवं ध्वनि के माध्यम से प्रभावित करती आ रही है. जल प्रदूषण के लिये आज प्रमुख रुप से हमारे औद्योगिक संस्थान ही जिम्मेदार है. जो कि हमारे जल स्रोतों के प्रदूषण को ६० प्रतिशत तक की जिम्मेदारी लेते है. कारखानों से प्रतिदिन निकलने वाले करोड़ों लीटर द्रव्य के रुप में विषैले केमिकल्स नली-नालों से होते होते हुए नदियों को दूषित कर रहे है. जिससे जल-प्राणी ही नहीं स्थल चर प्राणी भी प्रदूषण से प्रभावित हो रहे है. समय-समय पर कल कारखानों की प्रदूषण की जांच प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा किया जाता रहा है., लेकिन रिर्पोट वही ठाक के तीन पात के बराबर आती है. मानव भी जल प्रदूषण के स्रोत बनते जा रह हैं. उनके घरों से निकलने वाले मल-मूत्र तथा गन्दे पानी सीधे हमारे जल स्रोतों को प्रदूषित करते है. पूर्व में मानव शौच के लिए खुले वातावरण में जाता था, परन्तु आज आधुनिकता में मनुष्य अपने घर का शौचालय प्रयोग करता है. जिसमें प्रति व्यक्ति कम से कम दो बाल्टी पानी, यानि ३० लीटर पानी का खर्च आता है, पानी का खर्च ३० गुना बढ़ा ही, शौचालय का दूषित पानी नदियों में ही जाता है. उपरोक्त कहने का तात्पर्य है कि आज मानव ही खुद या कारखानों के माध्यम से जल प्रदूषण को बढ़ावा दे रहा है और स्वयं प्रदूषित जल पीने को बाध्य हो रहा है. यमुना नदी, गंगा

नदी को एक नजर से देखने पर ही प्रदूषण से रुह कांप उठेगा. नदियों के प्रदूषण के लिये तंबाकू भी काफी हद तक जिम्मेदार है. तंबाकू न सिर्फ मानव स्वास्थ्य के लिए घातक है बल्कि इसका उत्पादन और इसकी पैदावार पर्यावरण तथा जंगल और जमीन के लिए भी खतरनाक साबित हो रहा है. तंबाकू से बनने वाले बीड़ी-सिगरेट आदि में बड़ी मात्रा में रसायनों का उपयोग होता है, जिससे जल स्रोत प्रभावित हो रहे है. खाद्य एवं कृषि संगठन के आंकड़ों के अनुसार एक एकड़ तंबाकू की खेती के लिये डेढ़ सौ पेड़ों को काटना पड़ता है. जबकि यही पेड़-पौधे वर्षा कराने में योगदान देते है. प्रदूषण का दूसरा रुप वायु प्रदूषण का मुख्य द्योतक हमारे कल कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले विषैले धूआं और वाहनों से हो रहे है. चिमनियों में मानक के अनुरुप फिल्टरेशन की आधुनिक व्यवस्था न होने से यह कल-कारखाने हमारे मानव जीवन को प्रभावित कर रहे है. वाहनों से निकलने वाले प्रदूषित धूआं, जिसमें अत्यन्त जहरीली गैसों का मिश्रण होता है. मानव जीवन को काफी प्रभावित करता है. कारखानों से निकलने वाले विषैले गैस मानव जीवन के लिए एक स्वीट-प्वांइजन का कार्य कर रही है. जब यही स्वीट प्वांइजन आवश्यकता से अधिक हो जाती है तो वह मानव फेफड़ों के विभिन्न रोगों के रुप में मनुष्य को उपहार देती है. भोंपाल गैस त्रासदी इसका जीता-जागता उदाहरण है जहॉं आज भी लोग सांस की बीमारियों से त्रस्त है. प्रदूषण का तीसरा कारक ध्वनि प्रदूषण है. आज वाहनों में पावर-फुल हार्न का प्रयोग हो रहा है. जिससे राह चलते व्यक्ति भी प्रभावित हो रहा है. कई विशेष स्थान जैसे अस्पताल, स्कूल के आस-पास तेज आवाज वाले ध्वनि यंत्रों का प्रयोग वर्जित होता है, लेकिन एक मनुष्य ही दूसरे का दुश्मन बना हुआ है. आज मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, भीड़-भाड़ वाले इलाकों में लाउडीस्पीकर आदि का भरपूर प्रयोग हो रहा है, परन्तु इन्हें रोकने का कोई भी समुचित उपाय नहीं हो पा रहा है. जिससे स्पष्ट कोई भी समुचित उपाय नहीं हो पा रहा है. जिससे निकलना लगभग असम्भव लग रहा है. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड करे तो करे क्या! दरअसल प्रदूषण नियंत्रण के लिए बनाये गये अधिनियम खुद भी कमजोरी की चपेट में है. इस अधिनियम की खामियॉं ही प्रदूषण की चपेट में है. इस अधिनियम की खांमियां ही प्रदूषण की रोकथाम में कारगर साबित नहीं होने दे रही है. आज हर राज्य को प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की कार्य प्रणाली को परखने की आवश्यकता है. वायु-जल प्रदूषण की रोकथाम के लिए वातावरण में वृद्धि हेतु अवतन वन क्षेत्रों में वृक्षा-रोपण करनी चाहिए.

शेष पृष्ठ १६ पर......

भारतीय लोकतंत्र के सवाल विषय पर परिचर्चा

✍ अरबिन्द कुमार सिंह,
स्थानीय संपादक, दै.हरिभूमि, दिल्ली

विख्यात गांधीवादी नेता तथा दर्शनशास्त्री प्रो. रामजी सिंह ने कहा कि भारत में दलगत राजनीति का दिया बुझ चुका है. दलगत राजनीति व सत्ता पर दलपतियों का कब्जा है और संसदीय प्रणाली महज औपचारिक लोकतंत्र बन गया है. उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में जनशक्ति ही सर्वोच्च है और अगर इस प्रणाली को जीवित रखना है तो फिर जनता के सवालों को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी. कंचना स्मृति न्यास द्वारा राजेन्द्र भवन में आयोजित पांचवी कंचना स्मृति राष्ट्रीय व्याख्यानमाला भारतीय लोकतंत्र के सवाल विषय पर बोलते हुए प्रो. सिंह ने जनजागरण पर विशेष जोर दिया और कहा कि भ्रष्टाचार, बेईमानी, दलबदल, सांसद निधि का दुरुपयोग, नोट के बदले वोट, राजनीति के अपराधीकरण जैसे मुद्दों के बीच सभी राजनीतिक दल अपने तस्वीर देख लें. अगर चुना हुआ प्रतिनिधि कसौटियों पर खरा नहीं उतरता तो उसे वापस बुलाने का अधिकार जनता के पास होना चाहिए. जिस देश में ७८ करोड़ लोगो की आय १ या सवा डालर प्रतिदिन हो वहां गरीबी, बेकारी तथा बदहाली का अंदाज लगाया जा सकता है. संसदीय लोकतंत्र या तो मरने वाला है या मर चुका है.

पूर्व विधि एवं न्याय मंत्री श्री शांति भूषण ने कहा कि भारत में लोकतंत्र की जड़े इतनी गहरी है कि उसे सरकार और तमाम ताकतें मिल कर भी नहीं मिटा सकती है. १९७७ की करवट इसे दिखा दिया जब पूरे उत्तर भारत में कांग्रेस को केवल एक सीट मिली थी. आज राजनीति में धनशक्ति प्रधान हो गयी है. लेकिन लोकतंत्र में धनशक्ति की बढ़ती भूमिका को रोकना असंभव नही है. भूअधिग्रहण को लेकर चल रहे आंदोलनों का उल्लेख करते हुए कहा कि जिस किसान की जमीन विकास कार्यो के लिए ली जाए उस किसान को पार्टनर इन डेवलपमेंट बनाये जाये. मीडिया अदालतों के मामले में आम तौर पर मौन रहती है, पर अगर सभी मिल कर ऐसी गड़बड़ियों को उजागर करेंगे तो गलत लोगो में भय होगा. श्री शांतिभूषण ने निचले स्तर की अदालतों में ८० फीसदी, उच्च न्यायालयों में ४० और सुप्रीम कोर्ट में २० फीसदी जजों पर उंगली उठायी और कहा कि स्वस्थ लोकतंत्र के लिए अदालतो की सफाई भी जरुरी है.

पूर्व केन्द्रीय मंत्री और सांसद श्री दिग्विजय सिंह ने कहा कि महात्मा गांधी का लोकतंत्र करुणा से भरा था पर भूमंडलीकरण का लोकतंत्र प्रतिस्पर्धा से होड़ ले रहा है. इसी का असर है कि ग्रेटर नोएडा में एक सीईओ की हत्या पर देश के प्रधानमंत्री को दुनिया से माफी मांगनी पड़ रही है. उन्होंने कहा आज संसद में फेरा, फेमा और पूंजी निवेश पर वाद विवाद होता रहा है पर गरीबों से जुड़े बुनियादी सवालों पर नहीं.

जानी-मानी पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक नीरजा चौधरी ने इसे चिंताजनक बताया कि आम आदमी की आवाज खत्म होती जा रही है. मीडिया की मौजूदा भूमिका को कटघरे में खड़े करते हुए उन्होने कहा कि इसमें तमाम कमियां भले आ गयी हों फिर भी कुछ जगह बची है जिसका अभी भी उपयोग किया जा सकता है. भले ही सुश्री मायावती, लालू यादव और मुलायम सिंह इस लोकतंत्र की उपलब्धि है पर यह देखना भी जरुरी है कि इन दलों में कैसा लोकतंत्र है. आधी संसद ही परिवारवाद का नमूना है. उनको लगता है कि आने वाले ५-१० सालो में संसद पर ५०० परिवार का कब्जा होगा. पहले राजनीति करने के लिए पैसा उद्योगपति देते थे पर अब तो पैसे के लिए राजनीति की जा रही है.

दैनिक हरिभूमि के स्थानीय संपादक अरविंद कुमार सिंह ने कंचना स्मृति न्यास के पांच आयोजनों के बारे में विस्तार से जानकारी दी और कहा कि पत्रकार कंचना की दर्दनाक मृत्यु के बाद उनकी जीवंत तथा बहुआयामी सक्रियता को सम्मान देने के इरादे से यह आयोजन हो रहा है. उन्होंने कहा कि इस बार कंचना स्मृति पुरस्कार के लिए कई नाम पर व्यापक विचार के बाद भी कोई मानकों पर खरा नहीं उतरा इस नाते कंचना स्मृति न्यास के प्रबंध न्यासी श्री अवधेश कुमार ने पुरस्कार की राशि को इस साल बिहार के बाढ़ पीड़ितों को मदद स्वरुप देने का फैसला लिया है.

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. रामजी सिंहने की जबकि संचालन वरिष्ठ पत्रकार शेष नारायण सिंह ने किया जबकि धन्यबाद ज्ञापन वरिष्ठ पत्रकार जयप्रकाश पाण्डेय ने किया. समारोह में माखनलाल चतुर्वेदी रा.पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र, कंचना के अध्यक्ष रामबहादुर राय, वरिष्ठ पत्रकार प्रबाल मैत्र, भाजपा के पूर्व महासचिव संजय जोशी, रामकृपाल सिन्हा, श्रीमती मृदुला सिन्हा, देवदत्त, बनारसी सिंह, डॉ० रवींद्र अग्रवाल, पुष्पेंद्र कुलश्रेष्ठ, जगदीश यादव, रमाकांत पांडेय, सुरेंद्र भाई समेत बड़ी संख्या में लेखक, पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद थे.

++++++++++++++++++++

राष्ट्रीय मुद्दा

भोपाल गैस काण्ड की राह पर कनोरिया केमिकल्स

- कनोरिया केमिकल्स में एक वर्ष के अंदर तीन बार दुर्घटना
- यही स्थिति रही तो हो सकती है भयंकर त्रासदी
- क्लोरिन गैस के रिसाव से हुई थी छः श्रमिको की मौत

ए.के.गुप्ता, सोनभद्र

उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के रेनूकूट में कनोरिया केमिकल्स एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. पचासों वर्ष से कार्यरत है. यह कारखाना इतना पूराना हो गया है परन्तु इसके वही पुराने मशीन आज भी बुढ़ापे की सांस ले रही है. इस कारखाने में सुरक्षा के पर्याप्त उपाय न होने से छोटी-मोटी दुर्घटनाओं की शंका बराबर बनी रहती है. कानोरिया केमिकल्स के एस.बी.पी. प्लाण्ट में एक ही वर्ष में तीन बार अग्नि दुर्घटना हुयी. जो कि सीधे तौर पर वहॉ की मैनेजमेंट की सुरक्षा कार्य शैली पर प्रश्न चिन्ह लगाती है कि यह सोचनीय विषय है कि कानोरिया केमिकल्स रेनूकूट में श्रमिग वर्ग कितना सुरक्षित है? गत ८ जुलाई, ६ जुलाई की मध्य रात्रि लगभग २:३० बजे एस.बी.पी प्लाण्ट में जो कि ब्लीचिंग पाउडर बनाता है, जो कि वाशीग पाउडर तथा कीट-पतंगों को मारने हेतु तथा अन्य केमिकल प्रयोग में आता है जो कि सूखे पाउडर के रुप में होता है, जिसे कि शीलन से दूर रखना होता है, अन्यथा आग लग जाती है. एस.बी.पी. पाउडर चूने और क्लोरिन में भांप प्रवाहित कर उचित तापमान पर बनाया जाता है, लगभग ७०० टन एस.बी.पी. पाउडर जल कर भस्म हो गया जिसमें कनोरिया केमिकल्स को अरबो रुपये का नुकसान हुआ चिन्ता की बात तो यह है कि

इतने सालों में इस इण्डस्ट्रीज के पास आज तक अपने अग्नि शमन दमकल भी नही है. पास के हिडालण्को इण्टस्ट्रीज से सहायता ली जाती है. यदि सहायता नहीं मिलती तो यह आग कितना विकराल रुप धारण कर सकती थी, यह अनुमान लगाना कठिन है. यह इत्तफाक ही था कि उस समय उस भण्डारण में कोई श्रमिक मौजूद नहीं था, अन्यथा कई श्रमिक कानोरिया केमिकल्स की खराब मैनेजमेंट व्यवस्था का शिकार होते, उसी तरह जिस तरह आज से लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व इसी केमिकल्स प्लाण्ट में छः श्रमिकों की मृत्यु क्लोरिन गैस रिसाव से हुयी थी. यह केमिकल्स प्लाण्ट सुरक्षा प्रदूषण संबंधी सभी प्रमाण पत्र धारी है तो यह सब दुर्घटना कैसे हो रही है, इसका मतलब साफ है कि इन्हें सुरक्षा सम्बंधी प्रमाण-पत्र के ये हकदार नही है. फिर भी अधिकारी अभी भी सुरक्षा को लेकर चुप्पी साधे हुए है. आखिर क्या ये भोपाल गैस त्रासदी जैसे दुर्घटना को, अपने यहॉ आमंत्रण नही है, इस केमिकल्स प्लाण्ट की अस्पताल भी एक डिस्पेन्सरी से अधिक कुछ भी नहीं है, न तो कायदे के डाक्टर नहीं मरीजों की उचित व्यवस्था. रसायन युक्त जहरीला पानीव कचड़ा पास के रिहन्द जलाशय में डोमिया नाला से होते हुए खुले आम गिराया जाता है, जिसे लोग तेजाबी नाला कहते है, जिससे आस पास के आम आदमी तथा जल प्राणी भी प्रदूषण की चपेट में है. परन्तु इस विशाल इण्डस्ट्रीज के अधिकारियों पर कुछ प्रभाव पड़ने वाला नही है, धीरे-धीरे दुर्घटना की बात दबती जायेगी, लोग भी भूल जाएंगे, बात ज्यों की त्यों रह जायेगी, परन्तु दुर्भाग्य वश कहीं कभी ऐसा न हो कि कोई बड़ा काण्ड हो जाये, और हजारों जाने चली जायें. इसलिए अभी समय है कि प्लाण्ट की सुरक्षा की सारी खामियां तंदरुस्त की जाये और ऐसे कदम उठाये जाये जो अवश्यम्भावी हो तथा लोगों की जाना माल की सुरक्षा हो सके.

++++++++++++++++++++++

कहानी

स्वतंत्रता यानी?

✍ **उमा सोनी** 'कोशिश',जबलपुर,म.प्र.

दिव्या एक होनहार छात्रा, जिसे सदा ही आगे रहना पसंद था. आगे रहने के लिए वह हर संभव प्रयास करती. प्रातः जल्दी उठना व्यायाम करना, पढ़ाई करना ये सभी चीजें उसकी दिनचर्या में एक अहम् भूमिका अदा करती थी, जिससे वह अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त करती. हर प्रतियोगिता में भाग लेना और जीत हासिल करना उसको अच्छा लगता था. इन्हीं सफलतओं के साथ वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी, बड़ी होने लगी. खेलकूद, सांस्कृतिक प्रोग्रामों में और अपने पाठ्यक्रमों में अव्वल स्थान पाती हुई, प्रगति करती चली गयी.

मुझे माफ कर दो मैंने जबरदस्ती तुम पर माडर्न होने की जिद थोपी. जिसमें सुरक्षा का सर्वथा अभाव नजर आया. नहीं, नहीं तुम जैसी हो, अच्छी हो. भारतीयता ही हमारा सुरक्षा कवच है. इस पश्चिमी अंधानुकरण ने अपनी चकाचौध से हम सबको अपने जाल में फंसा रखा है. झूठी शान शौकत में हम स्वयं को असुरक्षित कर लेते है और परिणाम बुरे ही निकलते है.

दिव्या अब बड़ी हो चुकी थी. माता-पिता की नजरों में वह अब विवाह योग्य हो गयी थी. उसकी खूबियों को नजर अंदाज कर वे अपनी जिम्मेदारियों से मुक्ति चाह रहे थे. उनका विचार था कि अब एक अच्छा सा होनहार लड़का ढूंढकर दिव्या का विवाह कर दिया जाय. उधर दिव्या जो कि अपने उज्जवल भविष्य के तमाम सपनों को संजोकर एक आत्म निर्भर लड़की बनना चाहती थी. प्रतियोगिताओं में भाग लेकर कामयाबी हासिल करना चाह रही थी और अपने माता-पिता के विचारों से एकदम अनजान थी.

जब तक दिव्या अपने कैरियर के प्रति जागरुक होती कि उधर उसके लिये एक होनहार इंजीनियर लड़के से रिश्ता तय कर दिया गया. किसी ने उसकी महात्वाकांक्षाओं को जानने की जरुरत ही नहीं समझी. न ही उसकी बातों पर ध्यान दिया. बस अपनी जिम्मेदारियों से मुक्ति का एहसास कर उसके माता-पिता ने चैन की सांस ली. प्रारंभ से ही एक अज्ञाकारी बेटी होने के कारण वह उनका विरोध न कर सकी और उनके फैसों के सामने सिर झुकाकर शादी के फेरे लेकर अपनी ससुराल चली गयी.

दिव्या जैसा नाम वैसा ही काम. अपने नाम के अनुरुप ही गुणवान होकर उसने ससुराल में सभी का मन जीत लिया. लेकिन पति महोदय जो कि जरुरत से ज्यादा ही प्रगतिशील थे, विदेशी चकाचौध के बीच ही अपनी बीबी को एकदाम मॉडर्न देखना चाहते थे. पग-पग पर उन्हें दिव्या की गलयिां नजर आने लगी. उन्हें लगा शायद किसी वजह से उनसे इसमें जल्दबाजी हो गयी.

पति महोदय का नाम दक्ष. दक्ष ने अपनी पत्नी को दोस्तों से मिलवाया. सभी उसका अभिवादन किया लेकिन तभी एक दोस्त हंस कर बोला "भाभी की तो मजाक ही पसन्द नही. हम लोगों द्वारा पूछे गये सभी प्रश्नों के उत्तर हां या न में दिया है. भाभीजी जरा आप फ्रेंक बनिये हां या ना से काम नहीं चलेगा."

दिव्या-"जी भाई साहब! मैंने ऐसा क्या कहा कि मैं आपसे फ्रेंक नहीं लगी?"

दक्ष-"क्या हुआ दिव्या? मेरे दोस्तों से बहस मत करो अपनी गलतियों पर गौर कर उन्हें सुधारने की कोशिश करों."

दिव्या-"मुझे समझ में नहीं आ रहा कि मैंने ऐसा क्या कहा कि आप सबको बुरा लगा. कृपया मुझे माफ करें."

दोस्तों के जाने के बाद दक्ष को लगा शायद दिव्या आज के जमाने के अनुकूल नही है. वैसी फ्रेंक भीा नहीं लगी जैसी होनी चाहिए. यद्यपि वह उसे चाहता था. लेकिन जैसे ही वह उसके साथ घार से बाहर निकलता तो उसे चिन्ता लगती कि कोई क्या सोचेगा? कोई क्या कहेगा? वगैरह.... . वह दिव्या को घर से बाहर जाने के पहले ही हिदायत देता कि ऐसे नहीं, ऐसे चलना है. ऐसे उठना चाहिये, ऐसे बैठना चाहिये. ऐसे खाना चाहिये, वैसे पीना चाहिये...आदि.

दिव्या को लगने लगा मानो वह एक कठपुतली बनकर रह गयी है. जिसकी डोरी पहले माता-पिता के हाथ में थी और अब पति महोदय के हाथ में. जो जरा सी भी प्रतिकूलता या ढिलाई बर्दाश्त नहीं करते.

एक दिन तो हद ही हो गयी जब दक्ष ने कहा "क्या? सलवार सूट पहनकर चलोगी, नहीं! गंवार बनके जाने की जरुरत नहीं. तुम टॉप, जीन्स पहन कर चलोगी तो मुझे अच्छा लगेगा."

दिव्या-"जी नहीं! कृपया ऐसी ज़िद मत करिये."

दक्ष-"जिद़ मैं नहीं तुम कर रही हो, जैसा मैं कहता हूॅ वैसा करो. इस बार मैं तुम्हें अपने दोस्तों के सामने फ्रैंक बनाकर ले जाना चाहता हूॅ."

दिव्या- "कृपया मुझे मत ले जाये मैं घर पर ही अच्छी हूॅ."

दक्ष-"नहीं! तुम्हारी मनमानी नहीं चलेगी, चुपचाप जो ड्रेस मैं लाया हूॅ, पहनकर

तैयार हो जाओ."
दिव्या-"ठीक है. कहकर कमरे में चली जाती है."
दिव्या मन ही मन सोचती रही कि कहॉ फंस गयी हूँ? मेरी किसी भी अच्छाई का यहॉ कोई मूल्य नहीं. कोई मुझे समझने की कोशिश ही नहीं करता. मेरे ऊपर सबकी मनमानी चलती है. जैसे मेरा कोई अस्तित्व ही नही है. कभी-कभी मुझे लगता है मैं एक स्वतन्त्र देश की नागरिक ही नही हॅं. जहॉ मेरे विचारो, व्यवहारों की अभिव्यक्ति ही बाधित हो वह देश कैसे स्वतंत्र कहला सकता है? इस पुरुष प्रधान देश में शायद ही कोई नारी स्वतंत्र हो. खैर....अपना जीवन शांतिपूर्ण ढंग से काटने के लिए, मुझे यह सब कना ही होगा. पति महोदय की बात न मानने पर भी मेरे माता-पिता को कष्ट होगा.
दिव्या ने पति महोदय की लायी हुई ड्रेस पहन ली. उसे देखकर दक्ष कह उठा-"वाह! अब लग रही हो कि एक इंजीनियर की बीबी हो. आज मेरे दोस्त तुम्हें अपनी ही मेजारिटी का समझेगें. थैक यू दिव्या."
दिव्या-"बस! बस! आपकी खुशी में ही मेरी खुशी है, चलिये. पार्टी में पहुॅचते ही दोस्तों की ऑखें खुली की खुली रह गयी."
दोस्त-"वेल कम! वेलकम! आज की पार्टी का बेस्ट कपल का खिताब आप ही जीतने वाले है."
दिव्या मन में सकुचाती हुई पार्टी के अनुकूल अपने को ढ़ालने की कोशिश करती रही.
दोस्त-"वाह! भाभी जी, आज आप एकदम फ्रेंक लग रही है. सभी दोस्तों ने हामी भरी."
दक्ष को अचानक अपनी गलती का अहसास हुआ. अब उसे अपनी पहले वाली दिव्या ही अधिक अच्छी लगने लगी. घर पहुॅचते ही दक्ष ने दिव्या से कहा-"मुझे माफ कर दो मैंने जबरदस्ती तुम पर माडर्न होने की जिद थोपी. जिसमें सुरक्षा का सर्वथा अभाव नजर आया. नहीं, नहीं तुम जैसी हो, अच्छी हो. भारतीयता ही हमारा सुरक्षा कवच है. इस पश्चिमी अंधानुकरण ने अपनी चकाचौध से हम सबको अपने जाल में फंसा रखा है. झूठी शान शौकत में हम स्वयं को असुरक्षित कर लेते है और परिणाम बुरे ही निकलते है."
दिव्या-"नहीं! नहीं! आप मुझसे माफी मत मांगिये. आपको अफसोस है यही मेरे लिए काफी है. भारतीय संस्कृति कभी भी किसी का बुरा नहीं चाहती. बशर्ते उसे किसी अपराध के लिए उकसाया न जाये. स्वतंत्रता भी वहीं अपना महत्व दर्शाती है जहॉ वह किसी की स्वतंत्रता को बाधय न करे, किसी पर थोपी न जाये. जब मेरे अनुसार चलने में आपके अहं को धक्का लगता है तो आप भी मुझ पर मॉडर्निटी न थोपें. यही दोनों के हित में होगा. यही स्वतंत्रता हमारे मन-मस्तिष्क की उत्सुकता और स्वास्थ्य को दृढ़ करती है. जहॉ हार्दिक और मानसिक तथा व्यावहारिक अभिव्यक्ति में कोई जबरदस्ती न हो, हस्तक्षेप न हो. दोनों पक्षों की भावनाओं और क्रिया-कलापों का आदर हो. यही आपसी सामजस्य ही हमारे, दाम्पत्य जीवन को सुखी और समृद्धशाली बन सकता है."
दक्ष-"ठीक है दिव्या! तुम जीती, मैं हारा! लेकिन यही मेरी सबसे बड़ी हारी हुई जीत है. जो मुझे तुम जैसा जीवन साथी मिला."

++++++++++++++++++++++++

दीपावली का त्यौहार

प्रेम-प्यार, आदर-भाव बना रहे परस्पर
सीखें हम श्रद्धा-भक्ति, चलें क्षमा की मूर्ति
व्रतवीर, ईशा, बुद्ध और राम के राह पर
बढ़े सिद्धि, समृद्धि देश की, हो नाम समाज का
हम रहें मिलकर आपस में, बनकर एक दूजे का

इसलिए मनुज गुण, कर्म-धर्म, संस्कार को अपनाया
सोचा, पाकर परंपरा का पर्व, हम सहज अपने जर्जर
जीर्ण-संकीर्ण विचारों से, हो सकते है मुक्त
हमारा कर्म विचार, विधर्मियों का करते रहे प्रतिकार
हिंदुओं ने शुरु किया, दीपावली का सुंदर त्यौहार

बुराई पर अच्छाई की जीत, शत स्वरों मे ंसच प्रज्वलित
अंधकार की गुहा दिशाओं में, हॅसती ज्योति विस्तृत
पाते हम सद्बुद्धि, तेज, सत्कर्मों से नित
मिटाकर जाति-पाति, वर्ण-भेद हम मनाते दीवाली
फुलझड़िया-पटाखें फोड़कर करते हम खुशियां जाहिर
मिलते एक दूजे के गले, बॉटते लावा और मिठाई
खाते हम कसम, निर्वाह करेंगे मनुष्यता का धर्म
भावुक मन का विषय विषाद भुलाकर, एक रहेंगे हम

जिससे विश्व में गुजता रहे, राम-कृष्णा का जयनाद
जिसे सुनकर विधर्मी भी बैठ जाये उठकर जाग
हमारे साथ मिलकर मनाये दीपावली का त्यौहार
कुसुम-कानन, अंचल में बहता रहे मंद-मंद
मानवता का शीतल सुगंधित सौरभ बयार साकार

डॉ० तारा सिंह, मुंबई

साहित्यिक

महानतम महान निराला जी

✍डॉ0 कौशलेन्द्र पाण्डेय ,लखनऊ

पं.सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद के अंतर्गत गढ़ाकोला नाम के एक गांव में उत्पन्न हुए थे. इस लघुलेख में मेरा अभीष्ट उनके साहित्यिक अवदान या कृतित्व का विवेचनात्मक अथवा समालोचनात्मक अध्ययन नहीं, वरन कुछेक सुप्रचलित, साथ ही कुछ अल्पज्ञात संस्मरणों के माध्यम से उनकी परोपकारी प्रवृत्ति, उनके औदार्य, स्वाभिमान, बड़प्पन तथा देवतुल्य आचरण को रेखांकित करना है जिससे कि साम्प्रतिक ही नहीं, अनागत पीढ़ियॉ भी स्वयं को उनके ही सांचे में ढाले, उन्हीं की तरह अपनी धरती से पूरी संवेदना के साथ सरोकारशील बनें. उनके व्यक्तित्व मात्र के कुछ पक्षों को ही इस कारण भी प्रस्तुत किया जा रहा है क्योंकि रचनात्मक मानदण्डो पर अनगिनत साहित्य चिन्तको के द्वारा अब तक पहले ही बहुत कुछ लिखा जा चुका है; १५ अक्टूबर १९६१ को उनके अवसान के बाद इसीलिए इन्हें हम 'महाप्राण' तक कहने में गौरव महसूस करते है.

रचनाधर्मी वर्ग अत्यन्त संवेदनशील होता है तभी उसके सोच एवं आचरण में मानवीय जीवन मूल्य समाहित हो पाते है. स्वयं अनेकानेक अभावों, वेदनाओ एवं अवसाद से दैनन्दिन रुप से जूझने वाला मानव ही दूसरे की पीड़ा को समझ पाता है. पर पीड़ा का ठीक-ठीक अनुमान वही कर सकता है जिसके पावों में बेबाइयॉ कभी फटी हों. जन्म से ही निराला जी अभावमय रहे, मातृ-सुख दो क्षण के लिए भी नहीं पा सके. उन्हीं के शब्दों में "दुख ही जीवन की कथा रही. क्या कहूं उसे जो नहीं कहीं।।" यूं वह मातृसुख से ही वंचित नहीं थे, दारिद्रय-पीड़ित भी थे, तो भी यह सोचकर वह संतुष्ट रहा करते कि समृद्धि किसी भी महारोग से न्यून नहीं, संक्रामक भी होती है यह, स्पर्श मात्र से किसी को भी भ्रष्ट कर देती है, ईश्वर भी इसी कारण समृद्ध व्यक्ति के सानिध्य से परहेज करता है.

संवेदनशील ही नहीं थे, संवेदना के सुमेह थे निराला जी, दरिद्र के लिये लक्ष्मी नारायण जी भी कह सकते है उन्हें. एक दिन वह गंगा स्नान करने गये, गंगा तट पर एक निर्वस्त्र भिक्षुक ने उनसे वस्त्रदान की इच्छा व्यक्त की. हालांकि दोनों परस्पर अपरिचित ही थे, निरालाजी ने अपना नया कुर्ता उसके कंधे पर रख दिया, फिर धोती पहनने लगे, इतने में एक वृद्धा ने आगे बढ़कर उनकी धोती ही मांग ली, बड़ी खुशी-खुशी उन्होंने अपनी धोती भी दान कर दी. एक तीसरे भिखारी को उन्होंने अपना कम्बल भी दे देना चाहा तो किसी व्यक्ति ने उनका हाथ पकड़ लिया. बहरहाल अपनी संवेदना की सम्पदा के बलबूते निरालाजी ने सहज ही तीनों लोक अपने परोपकारी सोपानों से नाप लिये थे.

इसी सम्बन्ध में कुछ अन्य घटनायें भी उनके व्यक्तित्व को उत्कर्ष प्रदान करती है. उनके वैराट्य को ठीक-ठीक न समझ पाने वाले प्रयासवासियों का एक वर्ग उन्हें पागल की कोटि में रखता था. अस्लियतन मानव-सेवा के उनके अपने ही तरीके थे जबकि उनके आलोचक निम्नस्तरीय सेवा सोच के कारण महाकवि की भावना की गहराई की थाह लगा पाने में अक्षम थे.

मई महीने की चिलचिलाती हुई धूप और गर्मी वाली एक दोपहरी थी. लू के थपेड़ों के सहयोग से डामल की सड़क पिच पिचा उठी थी, रामबाग स्टेशन के समीप पुल के नीचे एक बड़ा ही नायाब नज़ारा था-कृद क्षीणकाय भिखारी पुल के नीचे लेटे थे और एक साधू बाल्टी से उनके ऊपर ही नहीं, आसपास की जमीन पर भी पानी का छिड़काव कर रहा था. इस मशक्कत के बाद वह उन्हीं भिखारियों के बीच में बैठ गया और उनसे किसी सुपरिचित की भांति बड़े प्रेम से बतियाने लगा था. यह साधू और कोई कैसे हो सकता था! मानव को मानव समझने वाले, नगर की नब्बे, प्रतिशत जनसंख्या के अंतर्गत स्वयं को भी गिनने वाले महानतम महान साधु एवं सरस्वती पुत्र निराला जी थे. उनके लिए एक नशा थी मानव जाति की सेवा जिसे इस युग में पागलपन की संज्ञा देते हैं हममें से बहुत.

पैसे की बहुत जरुरत थी तो निराला नंगे पांव ही लुंगी लपेटे हुए 'किताब महल' के स्वामी के पास अपने देय पारिश्रमिक के लिए पहुँचे. उनसे दस-दस के नोटो में तीन सौ रुपये प्राप्त किये जिससे नोटो को भुनाने की असुविधा से बचा जा सके. बॅधे हुए यह नोट उन्होंने अपनी लूंगी की फेंट में लपेट लिये थे. तलवे झुलसाते हुए अलोपीबाग के निकट पुनः एक वृद्धा भिखारन से भेंट हुई. 'बेटा' सम्बोधन के साथ उसने उनसे कुछ पैसे मांगे जिससे कि वह अपनी उदराग्नि का शमन कर सके. देखते रहे कुछ क्षण उसे, उसकी आंखों में भूखी ममता के अक्षर भी पढ़े थे. 'बेटा' सम्बोधन के लिए आजन्म तरसे निराला जी ने तुरंत ही लुंगी में लिपटी नोटों की गड्डियां उसके हाथों में इस शर्त के साथ थमा दीं कि वह अब कभी भी भीख नहीं मांगेगी. संवेदनशीलता तथा परहित कामना के अतिरिक्त महाप्राण की मातृप्रेम की पिपासा की तीव्रता की सहज ही थाह

ली जा सकती है इस प्रकरण से.

निराला जी का निरालापन भी कम निराला नहीं था. जेब में कुछ रकम थी तो अपने आवास तक के लिए एक इक्का कर लिया. उतरते ही उन्होंने दस का एक नोट इक्केवाले के हाथ में धर दिया. सवारी के पास छुट्टा पैसे न होंगें-यह सोचकर नोट भुनाने के लिए इक्कावाला किसी दूकान तक चला गया था. लौटकर आाने पर उसने सवारी को इक्के पास नदारत पाया. क्या करता फिर वह! कुछ दूर आगे बढ़ा तो निराला जी दिख गये. वही कुछ कहता पर निराला जी स्वयं पूछने लगे-'क्यों तुम्हें दस रुपये कम दिये क्या? अच्छा, बाकी फिर कभी ले लेना-आज मुझे पैसे की जरुरत है.'

नहीं महाराज! पैसे तो बहुत ज्यादा दे दिये आपने; अपने बाकी पैसे तो ले लीजिये.

बोले वह-'ले जावो...सब तुम्हीं' कहकर वह अपनी राह-राह चल दिये. इन क्षणों में इक्केवाले की आंखे श्रद्धा और अचरज से छलकने लगी थी. अपने सौभाग्य पर अल्लाह को शुक्रिया अदा करते हुए उसने महाकवि को मन ही मन नमन भी किया था.

नितान्त स्वाभिमानी भी थे निराला जी. हिन्दी जगत के यह सूर्य खुद ही चूल्हा फूंककर रोटियॉ सेंकते, कई दिनों तक बासी रोटियॉ चबा-चबाकर खाते. वे न होती तो निराहार ही खर्राटें भरने लगते. मजदूर सा जीवन जीने वाला महापुरुष भला स्वाभिमानी क्यों कर न होता! देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद इलाहाबाद आये तो अपने पी.ए. के माध्यम से उन्हें बुलवाया. महादेवी जी के साथ पहुंचकर पी.ए. ने उनसे अनुरोध किया-'राष्ट्रपति आपसे मिलना चाहते हैं, गवर्नमेंट हाउस मेरी गाड़ी से ही साथ-साथ चलें तो अच्छा होगा.'

एकायक उत्तेजित हो उठे वह, 'मैं वहां क्या करने जाऊं? वह राष्ट्रपति है तो मैं भी साहित्यपति हूँ; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की हैसियत से वे खुद यहां आ सकते है....आखिर मेरा राष्ट्रपति से क्या लेना देना? यूं निराला जी ने आसानी से ठुकरा दिया राष्ट्रपति का बुलावा.

नेहरु जी और वह परस्पर कभी नहीं मिल पाये. हां, लखनऊ में वह गांधी जी से मिलने गये. भेंट के लिए केवल बीस मिनट का समय महादेव देसाई जी के सौजन्य से स्वीकृत हुआ. हुआ यूं कि इन्दौर की एक सभा में गांधी जी ने अपने भाषण में सभी से एक प्रश्न किया, 'हिन्दी का रवीन्द्र नाथ टैगोर कौन है?' स्वयं गॉधी जी ने अपने प्रश्न के किसी समुचित उत्तर का संकेत नहीं किया था. लखनऊ से प्रकाशित तथा डॉ० उषा बनर्जी द्वारा सम्पादित 'कला वसुधा' ने जनवरी-जून२००४, संयुक्तांक के अंक में निराला का ही लिखा एक लेख मुझे पढ़ने को मिला जिसके अनुसार गांधी जी कुछ दिन बाद लखनऊ आये हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय का उद्घाटन करने. यहां भी उन्होंने अपने भाषणमें इन्दौर जैसी ही आवाज दी, 'कौन है हिन्दी में रवीन्द्रनाथ ठाकुर?' अब निरालाजी के लिए महात्मा जी रहस्य से लगने लगे थे-अंततः महादेव देसाई जी के सहयोग के फलस्वरुप वह गांधी जी से मिल पाये थे. निरालाजी ने नितांत निर्भय होकर पूछा-महात्मा जी, आप खुद ही कहते हैं कि आपको हिन्दी का ज्ञान नहीं, फिर आपको क्या अधिकार है यह प्रश्न करने का कि हिन्दी का रवीन्द्र नाथ ठाकुर कौन है? मेरे कहने का मतलब कुछ और था-महात्मा जी बोले.

निरालाजी ने अपने प्रश्न का मन्तव्य प्रकट किया-'यानी आप रवीन्द्र नाथ जैसा साहित्यिक व्यक्तित्व हिन्दी में नहीं देखना चाहते, प्रिंस द्वारकानाथ ठाकुर का नाती, या फिर नोबुल पुरस्कार प्राप्त मनुष्य ही देखना चाहते है हिन्दी में' इस पर निरुत्तर-निर्वाक गॉधी जी ने केवल इतना कहा-'मेरे पास आपसे बात करने के लिए ज्यादा वक्त नहीं, आप अपनी कृतियॉ मेरे पास भेज दीजिये.' यूं अपने संवाद से उन्होंने महात्मा जी से अपेक्षा की कि बिना जाने-बूझे कि हिन्दी में क्या-क्या और किसने कितना लिखा है, किस स्तर का है उसका सृजन-ऐसे असार्थक सवाल सभाओं में न किया करें. इस प्रसंग का प्रभाव यह रहा कि गांधीजी ने उक्त प्रश्न की पुनरावृत्ति कभी नहीं की.

निराला जी का सोच और व्यवहार कभी भी बनावटी नहीं रहा. वैसे सहृदयता के अंतरिक्ष थे वह. पं. जवाहर लाल नेहरु के बहनोई आर.एस.पंडित के निधन की सूचना कुछ विलम्ब से संज्ञान में आने के कारण वह अंत्येष्टि स्थल की ओर जा रहे थे जबकि वहॉ से वापस हो रहे लोगों ने बताया कि श्मशान की सारी प्रक्रिया सम्पन्न हो चुकी है. निरालाजी का उत्तर था-'सब लोग लौट रहे हैं तो इस बात से उनका क्या लेना देना?' वे दाह-स्थल पर गये, अधजली चिता पर रात भर पहरा देते रहे. उनका उद्देश्य तो स्मृतिशेष पंडित को श्रद्धांजलि देना था आखिर!

महाप्राण के निष्प्राण शरीर को ऐसे ऐसे लोगों ने देखना चाहा जो प्रयाग में रहते हुए भी कभी उनकी चौखट तक नहीं गए. संभवतः धिक्कार रहे थे उनके अंतःकरण निरालाजी के प्रति उदासीनता या उपेक्षा भाव के लिए. यह संभावना भी मानी जा सकती है कि महाकवि के देहावसान पर उपस्थित रहने वालों की फेहरिश्त में अपना भी नाम शामिल करवाने की महत्वाकांक्षा से ग्रस्त थे वे. बैजू, निराला जी का पड़ोसी जो मजदूरी के लिए प्रस्थान करने से पूर्व उनसे सुरती का दैनन्दिन रूप से आदान-प्रदान किया करता था, कई दिन पहले से ही

शेष पृष्ठ १९ पर.....

कहानी

चुटकी भर नमक

✍ मदन मोहन वर्मा

पापा कभी माफ नहीं करेगें, सोच रही थी, मैं. निर्मल ड्राइव कर रहा था. चहकता हुआ, विहंसता हुआ, सौम्य, सुदर्शन निर्मल विलियम्स, आज शान्त ही नहीं गुमसुम भी था. सम्भवतः वह भी यही सोच रहा था क्या कि मॉ उसे माफ नहीं करेगी. परन्तु उसे ऐसा सोचने का कोई औचित्य नहीं था. उसका परिवार खुला-खुला था. विचारों से भी, सामाजिकता से भी और सब तो सब धर्म-जाति भेद में विश्वास के परे. हॉ मेरे मॉ-बाप, मेरे सम्बंधी, मेरा गांव 'देवनगरी' और सब तो सब मेरे कतिपय तथा कथित हितैषी और मित्र भी कहीं न कहीं मुझसे सहमत नहीं थे. जब मैंने उनसे निर्मल विलियम्स से विवाह करने के निश्चय को बॉटना चाहा. वे भी, मुझे ऐसा लगा, मुझसे ऐसा कहना चाह रहे थे कि "मेरा यह निर्णय लोकमत के विरुद्ध होगा और सामाजिक-धर्म से पलायन होगा."

मैं भी समझती थी यह बात. मेरा गांव पूर्वी उत्तर भारत के दक्षिणी कोने पर बसा गाजीपुर जिले का वह गांव है जिसे आज भी इस इक्कसवी सदी में लोग 'देवपुरी' के नाम से ही पुकारते है यद्यपि कि गांव का नाम 'देवनगरी' है. गंगा किनारे बसा यह गांव पुण्यत्माओं की बस्ती है, भरे-पूरे हैं लोग, एक जुट रहते हैं. सबके सुख-दुख एक है और हमारे बाबा-दादी की ही भांति हमारे मॉ-बाप का सम्मान करते हैं. एक तरह से हमारा परिवार हमारे गांव में ही हीं आस-पास के २०-२० कोस तक पूजा जाता है, कान्यकुब्जीय परिवार, मॉ-बाप की एकलौती पुत्री, भाग कर एक ईसाई को गले ही नहीं लगाया, विवाह बन्धन में भी बंध गयी. वह भी कचहरी जा कर, दो गवाहों के बल पर यह जानते हुए कि कोई भी कभी भी मुझे नहीं करेगा.

परन्तु एक आस बाकी है, क्षीण सी/मॉ, मॉ है और पिता, पिता. साथ ही दादी भी है और बाबा भी जो मेरी खुशी को अपनी खुशी मानते हैं और मेरे गम को अपना. चौबिस वर्षो का साथ है इनका. ऐसे कैसे झुठला देगें?

हॉ, लेकिन मैंने तो झुठला दिया न एक मानवोचित प्यार का साथ देने के लिए केवल चार का नहीं चार सौ से भी अधिक लोगों के स्नेह को लात माार कर.

क्या सच में ठीक किया मैंने? यदि ठीक किया तो अच्छी बात है. इतना सोच विचार क्यों? माफी की दरकार क्यों, आस क्यों? यदि नहीं तो निःसंदेह स्वयं को झुठलाने का लाभ क्या, झूठी आस पालने का औचित्य क्या.

सफर तो कर रही थी, मैं इलाहाबाद जक्शन और दिल्ली एयर पोर्ट पहॅुच ही जाऊँगी. वहॉ से लन्दन भी सुबह पहॅुच जाऊॅगी. फ्लैट भी है, निर्मल की मॉ भी है, निर्मल का छोटा व्यवासय भी है और मेरा अपना व्यवसाय और सेवा कन्सलटेंसी का काम भी. छोड़ो श्रद्धा, छोड़ों, अतीत भूलो वर्तमान को जीओ और भविष्य की नींव रखों ऐसी नींव जो लन्दन वासियों के काम आये, तुम्हारे भी काम आये तथा यदि तुम्हारें गांव-घर वाले चाहे तो उनके भी.

तनिक सी राहत दी, इस सोच ने. हमारी इलाहाबाद तक की रोड यात्रा हम दोनों के संवादहीनता के बावजूद भी अभी तक निर्विहन आगे बढ़ती जा रही थी. निर्मल क्या सोच रहा था इससे अनभिज्ञ मैंने अपनी आंखें बंद कर ली. कब झपकी लग गयी, इसका संज्ञान तो नहीं ले सकी, मैं परन्तु निश्छल मैं बॅकेट सीट से सिरस टिकाये नींद में चली गयी.

नींद में ही देखती क्या हूॅ कि एक धवल वस्त्र धारण किये आभापूर्ण धवल दाढ़ी, मूंछ का देवतूल्य मानव बड़ी-बड़ी परन्तु घूरती आंखों वाली सौम्य मुखाकृति तथा अमृतवाणी के स्वामी एक, हॉ एक बाबा तथा उनके ठीक पीछे एक आकृति जो नारी तो लग रही थी पर धूमिल सी या यो कहिए अस्पष्ट परछाई सी खड़ी. बाबा भी खड़े है, और कह रहे हैं, "बिटिया तुम्हारी यह राह क्या कष्टक विहीन है, क्या मानयोचित मर्यादित कार्य का उछाह है इसमें, क्या तुम स्वयं ही मन ही मन कष्ट का अनुभव नहीं कर रही हो."

देखती क्या हूॅ कि वह पीछे खड़ी नारी मूर्ति भी मेरी ओर ही देख रही है और लगता है वह भी बाबा के प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए लालायित तो है, उल्लसित भी है वह स्यात्.

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया, लगता है मन और वाणी दोनों एकाकार हो गये हैं और एक जुट है बाबा के प्रश्न को अनुत्तरति रहने देने के लिए. पर तभी, "बिटिया मैं जानता हूॅ मेरे प्रश्न तुम्हें विचलित कर रहे है. तुम उद्वेलित हो इसलिए कि तुम्हें भी अपनी यह स्वयं अपनायी गयी राह दिशाहीन सी लग रही है."

"नहीं बाबा, ऐसा नही हैं, मैं उद्वेलित नहीं संशकित हूॅ. इस राह पर चल तो पड़ी हूॅ, मैं पर भविष्य के प्रति आशावान नहीं. एक भयमिश्रित भविष्य को देख रही हूॅ मैं."

"ऐसा क्यों बिटिया?"

"ऐसा इसलिए बाबा कि मैं अपनी मॉ-पिता जी, दादा-दादी से बहुत प्यार करती हूॅ बहुत-बहुत और जब उन्हें मेरी इस राह का संज्ञान होगा तब यह टूट जायेंगें और उनके लिए मेरी मौत लगभग सुनिश्चित हो जायेगी."

"ऐसी सोचती हो तुम या यह केवल

कयास है तुम्हारा"
"मतलब"
"मतलब यह कि बिटिया रानी कि तुमने कभी भी इन लोगों से प्यार ही नहीं किया कभी नहीं. प्यार विश्वास का पर्यायवाची है. प्यार में दुराव छुपाव, अलगाव और पलायन नहीं होता. प्यार पकड़ता है, जोड़ता है किन्तु तोड़ता नहीं, कभी नहीं, कदापि नहीं"
"यह दोषारोपण है बाबा."
"नहीं यह सच है और केवल सच. तुमने केवल स्वयं से प्यार किया, स्वयं के मैं-मय भावनाओं से, मैं-लिप्त स्नेहाशीष से, मैं-पूर्ण स्वार्थो से."
"मैं स्वार्थी नहीं हूँ" एक बुझी-बुझी आवाज में कहा मैंने. "हॉ, तुम स्वार्थी भले ही न कहो अपने को, परन्तु स्वार्थ परक तो हो, स्वार्थ ग्रसित तो हो ही तुम."
"............"
"ऐसा लग रहा कि तुम कहीं खो गयी हो श्रद्धा."
"......."
"श्रद्धा!"
"जी बाबा!"
"कहॉ खो गयी तुम!"
"कहीं नहीं बाबा, घर याद आ गया."
"ऐसा क्यों?"
"बाबा लन्दन से आयी थी निर्मल को साथ लेकर घर, परिवार, स्नेही, हितैषियों, संबंधियों एवं पूरे गांव से आर्शीवाद प्राप्त करने और सदा-सदा के लिए निर्मल का आजीवन साथ निभाने, जन्म-जन्मान्तर का भाव जगाने और सात जन्मों का धर्म निभानें."
"परन्तु ऐसा कुछ हुआ क्यों नहीं?"
"इसलिये बाबा कि लन्दन से आने पर पता लगा यहॉ सब कुछ निश्चित हो चुका है. मात्र मेरे हॉ, की औपचारिकता निभाने की तैयारी थी और सब, हॉ सभी खुश थे, बहुत-बहुत खुश."
"और वह खुशी तुम्हें रास नहीं आई?"
"........"
"हैं न श्रद्धा?"
"नहीं, ऐसी बात नहीं बाबा. पर मेरी भी खुशी का किसी न किसी को तो ध्यान रखना चाहिए था न."
"बिटिया ध्यान है तुम्हें जब मात्र सात वर्ष की थी. तुम्हारें पैर में पार्क में पड़ा कॉटा चुभ गया था. कितनी चिल्लाई थी तुम, तड़पी थी तुम. मात्र नन्हें से कॉटे के कारण तुम्हारे पिता ने तुम्हें अपने एक पैर की गोद में बैठा कर दूसरे पैर को अपने दूसरे पैर पर रख कर तुम्हारें पैर का चुभा कॉटा निकाला था? तुम जब खिलखिला कर हंस पड़ी तब तुम्हारे पिता मात्र मुस्कुरायें ही थे. कितने सुख की अनुभूति हुई होगी उन्हें. कितने भाव विह्वल हो गये होगें वह तुम्हें खिलखिलाता देख कर. कभी ध्यान दिया है तुमने?"
"तो"
"तो बिटिया जो सुख की अनुभूति दूसरों को दुःख से निजात दिलाने से मिलती है. वह सुख स्वयं दूसरों को दुःख देकर प्राप्त करनें में नहीं मिलता, सम्भवतः कभी नहीं."
"तो आप यह कहना चाहते हैं कि मैंने अपने मॉ-बाप एवं सभी नाते-रिश्तेदारों को दुख दिया है अपने इस कृत्य से".
"यह तो तुम्हारें सोचने, समझने एवं आज तक तुम्हें प्राप्त संस्कारों से ही उत्तरित हो सकता है बेटा."
और देखती क्या हूँ कि एक झटके के साथ मेरी तन्द्रा भंग हो जाती है. गाड़ी लाल बत्ती पर खड़ी है. निर्मल आश्वस्त है और मैं नींद की खुमारी में तो नहीं थी पर विक्षित-मना जरुर थी और चन्द क्षण पहले जो कुछ भी स्वप्न-लिप्तावस्था में देखा, महसूस किया, समझा उसे अब गुनने की बारी आ गयी है. पर मैं शान्तमना बैठी केवल निर्मल की ओर कनखियों से देखा भर मात्र. न वह बोला, न मैं. एक अनबोलापन की स्थिति थी. स्यात् वह भी कुछ गुन रहा था. मैं भी कुछ बुन रही थी. तभी गाड़ी चल पड़ी. हरी बत्ती हो गयी थी.
"निर्मल कहॉ है हम लोग?"
"इलाहाबाद सिविल लाईन्स के मध्य."
"यहॉ से?"
"मामा के पास. गाड़ी वहीं छोड़ेगे और प्रयागराज से दिल्ली."
"नहीं निर्मल."
"क्या?"
"हॉ निर्मल. चलो चुन्नी लाल के रेस्ट्रां में रात का खाना खाते है. बहुत दिन हो गया उसके यहॉ खाना खाये हुए. देखते है छः साल पहले वाली गुणवत्ता उसके रेस्ट्रा में अब भी है क्या."
"फिर."
"उसके बाद नेतराम के यहां कटरा चलेगें दो-दो रसमलाई खायेगें और छः किलो, छः किस्म की अलग-अलग मिठाईयॉ लेगें और तब..तब." अटक गयी, श्रद्धा.
"तब कहॉ श्रद्धा" कुछ अधीरता थी उसके वाणी में. एक कम्पन का भी आभास हुआ.
"........." चुप रह गयी श्रद्धा.
"श्रद्धा?"
"....चुप्पी नहीं तोड़ी श्रद्धा ने."
"चुन्नी लाल का रेस्ट्रां आ गया श्रद्धा. श्रद्धा चौकी और उतर गयी गाड़ी से बिना निर्मल को और देखे हुए और जाकर बैठी रेस्ट्रां में वहीं उसी टेबुल पर उसी स्थान पर जहॉ वह छः साल पहले अक्सर ही बैठा करती थी. इसी बीच निर्मल भी आ गया. उसने भी एक कुर्सी हथिया ली और सुन्दर पुराना तथाकथित बियरर उनके पास आया. बीबी जी आज तो बहुत दिनों बाद. कैसी है आप?
"ठीक हूँ सुन्दर. दो थाली! पसन्द तो तुम्हें याद है न?"
"हॉ बी बी जी आपको और आपकी पसन्द को कभी भूल पाऊगा क्या?" कह कर वह चला गया.
अनबोला बना रहा. दोनों मन्थन कर

रहे थे. क्या? यह उनके चेहरे से केवल झलक रहा था. परन्तु विषय क्या था? मात्र अन्दाजा लगाया जा सकता था और अन्दाज यह कि दोनों सम्भवः यही सोच रहे थे-प्रयागराज एक्सप्रेस से दिल्ली और दिल्ली से लन्दन और फिर अपने-अपने दिनचर्या पर. कहीं ऐसा तो नहीं कि यह बात ही न हो और कोई दूसरी बात उनके मन और मस्तिष्क को मथ रही हो और वह किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पा रहे हो अथवा निर्मल घर गृहस्थी के भविष्य का खाका खींच रहा हो और श्रद्धा मॉ-पिता के मनोदशा को लेकर चुर रही हो. जो कुछ भी हो दोनों अपने स्वभाव के विपरीत केवल खा खा रहे थे या यों कहियें कि खाने का धर्म निभा रहे थे बेमन के. इसमें न तो उन्हें रस मिल रहा था न ही जाने अनजाने किसी भी प्रकार की तृप्ति ही. यह उनका खाने का धर्म था अथवा मात्र औपचारिकता यह भी कह पाना स्वयं दोनो के लिए आसान नहीं था.

वे उठे. हाथ-मुँह धोया. बहुत आग्रह पर भी सुन्दर ने उनसे खाने का धन नहीं लिया. काउण्टर पर बैठे नवयुवक से उसकी बात हो गयी थी, थाली परोसने के तुरन्त बाद ही. अनमने मन से वे दोनों आकर गाड़ी में बैठ गये.

"अब कटरा, नेतराम की दुकान पर. " श्रद्धा ने कहा और निर्मल ने बिना एक शब्द बोले ही गाड़ी को आगे बढ़ा दिया. दोनों शान्त थे और निशब्द भी जैसे जुबान कुछ बोलने के योग्य ही नहीं रह गयी थी. यहॉ फिर श्रद्धा पहले उतरी. दुकान में गयी. अलग-अलग दो-दो रसमलाई मांगी और छः किलो विभिन्न मिठाईयां को पैक करने के लिए कह कर निर्मल की प्रतीक्षा करने लगी. वह आया. एक प्लेट उसे पकड़ाया और केवल एक शब्द कहा, "खाओ."

निर्मल ने खा लिया. श्रद्धा ने भी एक नहीं दो बोतल पानी का लिया और छः पैक उठाये. धन का आदान प्रदान हुआ और पहले की ही भांति यंत्रवत गाड़ी में दोनों बैठ गये. निर्मल की प्रश्नवाचक आंखे श्रद्धा से मिली. श्रद्धा ने भी प्रश्नवाचक निगाहों से निर्मल को देखा और मात्र दो शब्द "देवपुरी, गाजीपुर." "क्या?" विस्मित खुली आंखो से खुले होंठ और अवाक् निर्मल ने अपना प्रश्नोंमुखी प्रस्तुत किया.

"हॉ" निर्मल अब घर. अभी भी बहुत कुछ शेष है. हम कल नादानी कर बैठे परन्तु आज नहीं. चलो घर चलें. हमें लगता है मेरे मॉ-पिता सारे नाते-रिश्ते सभी बन्धु-बान्धव हमें इस रुप में सहर्ष स्वीकार कर लेगें. हॉ, केवल चलो. अब कोई प्रश्न नहीं, कोई भी नहीं.

निर्मल में गज़ब की सहिष्णुता थी, अपूर्व धैयर्य एवं सांसारिक, सांस्कृतिक, मानवता का भण्डार था वह. वह सब समझता है मानव प्रकृति भी मानव धर्म भी, सामाजिक दायित्व भी और संसार का वैविध्य भी. वह विधि-विधान का जहॉ एक ओर पोषक था वहीं, कर्म-धर्म परायणता भी थी उसके अन्तरमन में विद्यमान. वह सृजन में विश्वास रखता था. विध्वंस में नहीं. उसके भाव भंगिमा से प्रतिवाद लेशमात्र भी नहीं झलक रहा था, शब्द तो उच्चारित होने का जैसे प्रश्न ही नहीं खड़ा होता था.

लगभग दो घण्टें पश्चात बनारस के क्लार्क अवध में थे वे दोनों एक ही कमरे में. नींद आयी अथवा नहीं, वह दोनों ही जाने. सुबह की पहली किरण ने उन्हें जगा दिया और वह चल पड़े अपने गन्तव्य की ओर "देवपुरी" पहुचे दोपहर सवा-बारह के आस-पास. सबने घेर लिया. दादी ने श्रद्धा का माथा चूम लिया और बाबा ने निर्मल को हाथो-हाथ ले लिया. कहा, "निर्मल रात एक बाबा आये थे. सपने में आये और इतना ही कह कर अर्न्तध्यान हो गये कि निर्मल कल आ रहा है. कितना सुखद सपना था वह बेटा."

दादी श्रद्धा को अपने कमरे में ले गयी, बैठाया अपनी चारपाई पर जो पलंगनुमा तो थी परन्तु शुद्ध गाजीपुरी "बान" की निखरही.

"बेटा तुम्हारे मांग में सिन्दूर की लाली देख रही हूँ मैं."

"हॉ दादी निर्मल मेरा पति है परसों तीसरे पहर से." सपाट परन्तु भयहीन उत्तर था, श्रद्धा का.

"बेटा पहले बता देती तो.....?"

"दादी हिम्मत नहीं जुटा पाई मैं."

"बेटा याद है तुम्हें जब तुम रोज़ अपने बाबा की थाली में एक चुटकी नमक रखना नहीं भूलती थी अभी लन्दन जाने के पहले तक."

"हॉ दादी."

"बेटा तुमने बाबा से कई बार पूछा था

ग़ज़ल

बुराई से बचा कोई नहीं है
मगर खुद से बुरा कोई नही है
दरीचों पर सजे दहशत के पर्दे
कहीं से झॉकता कोई नहीं है
दिलों में दूरियॉ कर ली हैं हमने
नहीं तो फासला कोई नही है
दुखों को बॉटना अच्छा है लेकिन
दुखों को बॉटता कोई नही है
ये बाजारे-मुहब्बत भी अजब है
यहॉ खोटा खरा कोई नही है
किनारों से वाकिफ़ है यहॉ सब
समन्दर-आशना कोई नही है.
तुम इन्सानों में इन्सानों को ढूंढो
यहॉ पर देवता कोई नही है
यूँ हम आपस में लड़ते भी रहे हैं
यूँ हम में बेवफा कोई नही है
बदल सकते हो तुम खुद जिन्दगी को
मुकदर से बॅधा कोई नही है
तुम्हारा शहर भी कैसा है 'अनवर'
मुझे पहचानता कोई नही है.

शकूर अनवर, कोटा, राजस्थान

कि वे रोज़ दोनों-समय थाली में एक चुटकी नमक क्यों लेते है और उन्होंने तुम्हें कभी नहीं बताया."

"हॉ दादी"

"बेटा वह एक रोटी, केवल एक चुटकी नमक से खाते है, वह भी पहली रोटी. शेष साग-सब्जी, दाल आदि-आदि से"

"दादी हमारे लन्दन जाने के बाद भी, आज भी."

"अरी पगली अभी तो परसो दोपहर के खाने में तुमने ही तो उनको एक चुटकी नमक दिया था, उनकी थाली में रखकर."

"ऐसा क्यों दादी."

"इसलिए बेटा कि तुम्हारे बाबा की तेईस वर्ष की आयु तक इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह प्याज, हरी मिर्च, नमक के साथ रोटी खा सकते. केवल नमक ही उनके रोटी का साथी रहा करता था. लगभग छः वर्षो तक जब वह अकेले रह गेये थे इस संसार में"

"दादी?" आसूँ झलक आये श्रद्धा की आंखो में.

"नहीं बेटा नमक की इस कहानी को नहीं सुनाना चाहती थी मैं किन्तु तुम्हारे मांग के इस हॉ एक चुटकी से भी कम सिन्दूर ने उगलवा दिया. इस एक चुटकी नमक की गाथा."

"दादी संस्कारित मैं यह क्या गलती कर बैठी वह भी अनायास बिना किसी भूमिका के बिना किसी औचित्य के और बिना किसी प्रकार की सामाजिकता तथा सांसारिकता को सम्भाले हुए. चुटकी भर सिन्दूर तो मात्र चिन्ह है परन्तु चुटकी भर नमक मानवधर्म है, दादी और सम्पूर्ण मानव जीवन का सार. यह मैं आज समझी हूँ, हॉ आज."

"श्रद्धा तुम्हारे मॉ-पिता को यह बात तुम्हारे जाने के बाद ही पता लग गयी थी. निर्मल की मॉ ने लन्दन से फोन पर बता दिया था और मेरे संस्कारमय पुत्र एवं पुत्रवधु ने हम दोनों को ही नहीं, सभी एकत्रित जन समूह को भी केवल बताया हीनहीं वरनू सबको यह आश्वासित भी किया कि तुम दोनों चुनरी को धवलश्वेत लेकर बहत्तर घण्टों से ही पहले ही इस देवपुरी में लौट आओगे."

"मॉ.पिता श्री को इतना विश्वास है मुझ विश्वासघातिनी पर."

"नहीं बेटा! उन्हें विश्वास था अपने लालन पालन पर अपने संस्कार पोषण पर अपने देवपुरी के सामाजिक वातावरण और अपी उस पुत्री पर जिस पर उन्हें गर्व था, गर्व है और सदैव रहेगा. बेटा याद रखो मॉ पिता का सीना उस समय गर्व से फूल जाता है जब वे यह अनुभव करने लगते है कि उनके सृजित वंशवेल में खोट दूर-दूर तक नहीं है, है तो केवल सुखद लावण्य एवं सुसंस्कृत जीवन जीने की लालसा से ओत-प्रोत विश्वास"

"पर दादी निर्मल......"

"ईसाई है यही न?"

"हॉ दादी."

"बेटा हम सब ईसाई, मुसलमान, हिन्दू आदि-आदि तो यही इस पृथ्वी पर आकर बनते है न. इसके पहले तो एक आत्मा होते है और धरती पर जब सांस लेते है तो एक मानव के रुप में न और हमारा धर्म, जाति, पूरा संसार केवल मानवता का ही होता है न."

"श्रद्धा मौन मनन में थी दादी के वचनों का अर्थ गुन रही थी."

"है न बेटा."

"हॉ दादी."

"तब बेटा हमें अगींकार करना चाहिए केवल मानव रुप और मानव धर्म को तथा पूजा करनी चाहिए मानवता की"

"दादी," चिपक गयी श्रद्धा अपने दादी के अकवार में सिसकती हुई मन ही मन वचनबद्ध होते हुए कि अपने बाबा कि "चुटकी भर नमक की परम्परा को अपना और अपने सृजित "कर्म" का "धर्म" बना लेगी. वंशवेल परिवारिक परम्पराओं और अनुशासन तथा मानवधर्म के परम्पराओं और अनुशासन तथा मानव धर्म को अपनाने से विकसित होती है, यह अपठित ज्ञान उसे आज हुआ है, आज अभी."

हास्य-व्यंग्य ग़ज़ल

गोष्ठी थी या के मेला रात भर
रात भर झेला झमेला, रात भर
यार को पा के अकेला रात भर
फिर पुराना खेल खेला रात भर
धुत्त चाचू आ तो जाते घर मगर,
दूर तक दिक्खा न ठेला रात भर
पक गये फल इस सेह्न के पेड़ के,
गिरते कभी कंकर तो ढेला रात भर
मेरे बाबा जो दिया करते मुझे
स्वप्न में दिखता वो धेला रात भर
काश्त मरने की कथा कहता तो है
गांव का सूना तबेला रात भर
सो गये सारे वही जागा रहा,
एक बस्स दीया अकेला रात भर
धीरे धीरे ऊंट वो अंदर हुआ,
जिसने मालिक को धकेला रात भर
एक घोड़ा खूब है जब हिनहिनाने के लिये
सारे इकट्ठे कर लिये क्यों गीत गाने के लिये
दाल से बुशर्ट, सब्जी से सनी है पैंट भी
फिर भी खड़े वो लैन में दावत उड़ाने के लिये
इतनी ऊंची कूद मारी इस उरद की दाल ने
लेना पड़ेगा लोन भैयया दाल खाने के लिये
सांप को चूहा दिखा कर बन्द पेटी में किया
छोड़ डाले केंचुए सब बिलबिलाने के लिये
दिन-ब-दिन जो बिल्डिंगे-द-बिल्डिंगे बनती रही,
कुत्ते तरस जाएगें प्यारे दुम हिलाने के लिये
कल के संयोजक सभी अब मंचनायक हो गये,
मुफ्त चेले मिल गये दारु पिलाने के लिये.

योगेन्द्र मौदगिल, पानीपत

गंगा, गंगाधर और ग्लेशियर को बचाइए

रुड़की. ग्लोबल वार्मिंग और मानवीय हस्तक्षेप बढ़ने से गंगा, गंगाधर और ग्लेशियर पर खतरा मंडरा रहा है. कहीं ऐसा न हो कि हालात और बदतर हो जाएं और आने वाले वर्षो में हम बाबा बर्फानी यानी बाबा अमरनाथ के दर्शन से ही वंचित हो जाए. यही नहीं मोक्षदायिनी और मुक्तिदायिनी सदानीरा गंगा भी अन्य नदियों की तरह सीजनल हो जाए. सदानीरा कहलाने वाली गंगा के आधार गोमुख ग्लेशियर का अस्तित्व सचमुच खतरे मे हैं. हिमाच्छादित क्षेत्रों में बढ़ी हलचल

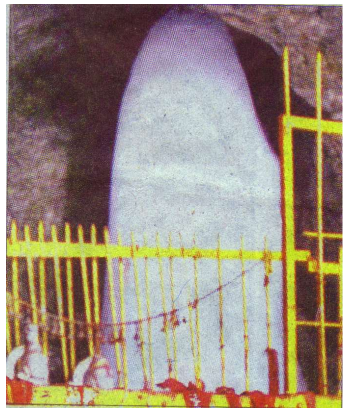

और ग्लोबल वार्मिंग इसके कारण है. गंभीर पहलू यह है कि ग्लेशियर से बर्फ पिघलने की दर पिछले करीब पंद्रह वर्षो में जहां सर्वाधिक आंकी गई है, वहीं हजारों-लाखों वर्षो से जमी बर्फ की परत भी अब ग्लोबल वार्मिंग से पिघलने लगी है. गंगोत्री ग्लेशियर सिस्टम की ऊपरी परत में ग्रवासिस और निचली परत में स्नो डैम्स बढ़ने से ग्लेशियर लेक आउटब्रस्ट फ्लड की चुनौती भी मुंह बाए खड़ी है. विज्ञानियों की माने तो अगले २५ वर्ष में क्षेत्र का पूरा ग्लेशियर सिस्टम गड़बड़ा सकता है. जिसका नतीजा गंगा की धारा को बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचाएगा.

जहर उगलते...पृष्ठ 8 का शेष
हरित पट्टी के विस्तार हेतु कृषकों को खाली परती भूमि पर वृक्षारोपण हेतु प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है. पर्यावरण सरंक्षण के प्रति जागरुकता पैदा करने हेतु गोष्ठी का आयोजन होना चाहिए. कोयला खदानों से निकलने वाले ओबर-वर्डन से पर्यावरण की क्षति रोकने तथा स्थापित करने हेतु ओवर वर्डन पर वृक्षारोपण एवं भूमि संरक्षण का कार्य किया जाये. तापीय विद्युत गृहों से निकलने वाली राख से पर्यावरण को सुरक्षित रखने हेतु राख पर भी वृक्षारोपण किया जाये. ताकि हर व्यक्ति को पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए जागरुक किया जा सके.

++++++++++++++++++++

महान्तम महान निराला जी.

....पृष्ठ 14 का शेष उनके दर्शन करता रहा, यह भुलाकर कि झोपड़ी में बैठे उसके बच्चे आने वाले हफ्तें में क्या खायेंगें, ही पिघलती आंखे से आने वालो से रामजुहार करता, फिर कहता-साहब जी! निराला जी नहीं रहे. और हां... महाप्राण की शवयात्रा एक जनसागर सी थी. 'रघुपति राघव राजाराम' पतित पावन सीताराम' के स्वर उस समय समवेत रूप से पहले तो अंतरिक्ष का स्पर्श करना चाहते, अनन्तर पतित पावनी की तरंगो का रूप लेकर उन्हीं में विगलित भी हो जाते थे.

क्या आप हंसना चाहते है

मैं पागल हो गया हूँ

एक शोहर की दो बीबीयां आपस में लड़ रही थी, एक कह रही थी आज बुद्ध है। दूसरी कह रही थी आज जुमेरात है।
शौहर ने उनकी बात सुनकर गुस्से में अपना सिर पीट लिया और चिल्लाया तो क्या मै पागल हो गया हूं , जो जुमे कि नमाज पढ़कर आ रहा हूँ।

यह तो मेरे घर में होता है

पहला दोस्त तुमने सर्कस देखा है? उसमें एक मोटी औरत एक पतले जोकर कुश्ती लड़ती है। उसे मारती पीटती है उसे गालियां देती है। फिर भी वह मुस्कुराता है ।
दुसरा दोस्तः यह सब तो मेरे घर में भी होता है।

अम्मा उम्र सोच कर बताना

पार्टी में महिलाओं के बीच जैसे ही उम्र की बात चली, बेटे ने इशारे से अपनी मां को बुलाया और कहा,"अम्मा उम्र सोच समझ कर बताना। पिछले कई पार्टियों में तुम मुझसे भी छोटी हो गयी थी।"

आप की दाल में

पुत्रः पापा, पापा, आप की दा ...
पिताः कितनी बार कहा है, खाना खाते समय बोलना नहीं चाहिये। चुप चाप खाना खाओ।
खाना खा चुके तो पिता बोलेः हां, अब कहो, तुम क्या कहि रहे थे?
पुत्र कुछ नहीं पापा, मै कह रहा था कि आप की दाल में मक्खी गिर गई है।

आपकी उम्र पचास साल है

एक आदमी दूसरे से आपकी उम्र पचास साल है।
दूसरा जी हां लेकिन आपको कैसे मालुम हुआ।
पहला मेरा भाई पच्चीस साल का है और वह आधा पागल है ।

बारिश की वजह से मैच इम्तेहान मे सवाल था कि क्रिकेट पर मजमूम लिखिये। एक बच्चे ने जवाबी परचे पर स्याही के कतरे डाल कर दिया कि बारिश की वजह से मैच नहीं हो सका।
उस्ताद ने परचे पर जीरो बना दिया और लिख दिया कि बारिश के साथ-साथ ओले भी पड़े।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ० तुमुल विजय शास्त्री

आलोक शर्मा, मुरादाबाद

व्यक्तित्व

चन्दौसी तहसील, मुरादाबाद, उ०प्र० के प्रथम ग्रेजुएट, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री राममोहन जी के द्वितीय पुत्र डॉ. तुमुल विजय शास्त्री जी का जन्म ११ अगस्त १९४८ को चन्दौसी में हुआ. विद्यार्थी जीवन से बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहें श्री शास्त्री जी विद्यार्थी जीवन से ही अपने व्यवसाय के साथ ही कला, क्रीड़ा, साहित्य, राजनीति सभी ओर सक्रिय रहे. विद्यार्थी जीवन में आपने एन.सी.सी. एवं ए.सी.सी के अनेक कैम्पों में भाग लिया तथा बी. सर्टिफिकेट प्राप्त किया. फुटबाल के अच्छे खिलाड़ी डॉ० तुमुल हिन्दी साहित्य परिषद की गतिविधियों को भी गति दी. १९६२ में नवभारत टाइम्स में एक लेख प्रकाशन से उत्साहित डॉ० तुमुल १९६६ में एक पुस्तिका दिल्ली के दलालों का नया पाप लिखी जिसने तहलका मचा दिया. जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निरंजन देव तीर्थ जी महाराज श्री गोवर्धन पीठ पुरी, उड़ीसा ने भी पुस्तक की प्रशंसा की.

इसके बाद एक्सप्रेस नारद साप्ताहिक का सम्पादन किया, पवन पुत्र साप्ताहिक के सह संपादक रहे. चन्दौसी से हिन्दी दैनिक अमर उजाला, बरेली, व वीर अर्जुन, मुराबाद टाईम्स, हिमालय दैनिक, स्वतंत्र दूत दैनिक, प्रशासन प्रकाश बदायूँ, जागृति बेला, इलाज, प्रदेश पत्रिका, हिमालय हि.सा. गोरक्षण वाराणसी, इंसान जाग उठा आदि देश के अनेक साप्ताहिक समचार पत्रों तथा पाक्षिक व मासिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रतिनिधित्व किया.

पत्रकारिता के क्षेत्र में सत्य एवं सनसनी खोजी पत्रकारिता के लिए सदैव प्रसिद्ध रहे डॉ० तुमुल १९७२ में अपने विश्व विद्या प्रतिष्ठान अन्तराष्ट्रीय संस्कृत विश्व विद्यालय से शास्त्री परीक्षा पास की. इसके बाद तुमुल तूफानी शीर्षक स्वीकृत कराया. जिसमें प्रशासन ने काफी रोड़े अटकाये. जिसमें कोर्ट के आदेश पर घोषणा पत्र स्वीकृत हुआ. तुमुल तुफानी के दैनिक होने पर पुलिस से टकराव हो गया और श्री विजय ने जिले में समानांतर थाने चलाये. पुलिस प्रशासन परेशान हो गया. ए.एस.पी. महेंद्र लाल ने तुमुल जी से बात की और अपराधों के नियत्रंण में उनका साथ मांगा. ए.एस.पी. ने तुमुल विजय के साथ जाकर मुरादाबाद में सट्टा लगाया संयोग से सट्टे का नंबर आ गया. उस समय में वीर अर्जुन, नव भारत, हिन्दुस्तान अखबारों के अतिरिक्त लोकल में बरेली का अमर उजाला था सभी ने बाक्स में समाचार लगाया कि एस.पी. ने सट्टा लगाया और नंबर आ गया. सट्टे का रुपया मालखाने में जमा हुआ. इसके बाद चन्दौसी में १४ पत्रकारों का दल आया उसने नगर भ्रमण किया. सुल्फे की १४ पुड़िया खरीदी गयी. १४ पत्रकार हाथ में लेकर थाने लेकर अपने को बंद करने को कहा. जिससे इंस्पेक्टर घबरा गया और सुल्फा बिकना बंद हुआ. इसी बीच डॉ० तुमुल ने नशाबंदी प्रचार समिति, संयुक्त छात्र संघ, भारतीय नवयुवक संघ, दयानंद वीर दल के आप अध्यक्ष रहे. आंदोलन इन संस्थाओं के माध्यम से जोरो पर चले. इधर आपने साहित्यिक गतिविधियां भी बढ़ायी. चन्दौसी राईटर्स एसोसिएशन के मंत्री, प्रेस क्लब चन्दौसी के अध्यक्ष के साथ ही साथ आपने गोरक्षा आंदोलन में भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया. आपके कार्यो को देखते हुए बिजली कर्मचारी संघ ने मण्डलीय मंत्री चुना. आपने कर्मचारियों की मांगो के समर्थन में एक इतना लम्बा जुलूस निकाला कि प्रशासन की नींद हराम हो गयी. कर्मचारी रात में उठा लिये गये लेकिन सभी मांगे मानी गयी. आप स्थानीय नगरपालिका कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष भी रहे और आपने निलंबित कर्मचारियों को कार्यभार दिलाया. ६ सितम्बर १९८२ को आपके पिताजी का स्वर्गवास से आप मानसिक रुप से टुट गये. १९८५ में एक दुर्घटना में रीढ़ की हड्डी टूट गयी. १९८५ में पत्रकारिता दिवस के अवसर पर गहन खोजी पत्रकारिता के लिए सम्मानित किया गया. १९९० में प्राकृतिक चिकित्सा डिप्लोमा किया. १९९७ में ऑल इण्डिया स्माल न्यूज पेपर्स एसोसिएशन की उ.प्र. शाखा द्वारा सम्मानित किया गया. २००० में अमरीकन बायोग्राफिकल ने मैन ऑफ द इयर से सम्मानित किया. आप आल इंडिया स्माल एण्ड मीडियम न्यूज पेपर फैडरेशन के आप अ.भा.संगठन मंत्री रहे. यूनीसेफ के सहयोग से पोलियों उन्मूलन का नेतृत्व किया. एशिया प्रकाशन द्वारा समाज सेवक की उपाधि, हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद से सम्मानित, अ.भा.हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा अलंकृत, डॉ० तुमुल कई अन्य संस्थाओं द्वारा सम्मानित हो चुके है. आप अ.भा.पत्रकार परिषद के जिलाध्यक्ष, चन्दौसी पत्रकार परिषद के सरंक्षक, श्री राममोहन सेवा आश्रम के प्रादेशिक मंत्री सहित अनेक संस्थाओं तथा समाचार पत्रों में विभिन्न पदों को सुशोभित कर रहे है.

श्री अरुण कुमार अग्रवाल

६०वें जन्म दिन पर विशेष

सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् एवं सीनियर मीडिया कन्सलटेन्ट श्री अरुण कुमार अग्रवाल मीडिया जगत में किसी परिचय के मोहताज नही है. सरकारी विभागों, उद्योग जगत, मीडिया जगत, हर जगह लोग श्रोता समाचार वाले अरुण अग्रवाल के नाम से जानते है. लघु पत्र-पत्रिकाओं में बहुत कम यह देखने को मिलता है कि किसी प्रकाशक, संपादक की पहचान साहित्यकारों के बीच ही नहीं बल्कि सरकारी महकमे में भी इतनी तगड़ी हो कि एक फोन से बड़े से बड़ा काम तुरंत हो जाए.

आज प्रिंट मीडिया के संक्रमण काल में भी एक साथ तीन पत्रों अंतरराष्ट्रीय श्रोता समाचार (मीडिया पर केन्द्रित भारत का पहला अखबार), पेड़-पौधा समाचार (पर्यावरण संरक्षण पर केन्द्रित अखबार), सेहत समाचार (प्राकृतिक चिकित्सा पर केन्द्रित अखबार) का निरन्तर प्रकाशन कोई एक सक्स जो बहुत बड़ा उद्योग पति न हो और कर रहा हो. यह अपने आप में एक मिसाल है. यह किसी व्यक्ति विशेष की दृढ़ इच्छा शक्ति को दर्शाने के लिए पर्याप्त है. अरुण अग्रवाल एक ऐसी सक्सियत का नाम है जो एक जगह बैठे-बैठे बड़े से बड़ा आयोजन, राज्य सरकारों से लेकर केंद्र सरकार तक के विभागों से वो काम जिसके लिए बड़े-बड़े धुरंधर धूल धूसरित हो चुके हो उसे चुटकी में ही करवा सके.

श्री अग्रवाल केवल मीडिया जगत में ही नहीं बल्कि पर्यावरण के क्षेत्र में भी अपनी महती भूमिका अदा कर रहे है. उनके पर्यावरण के प्रति गहरी रुचि के कारण ही पर्यावरण संरक्षण समिति, इलाहाबाद के सचिव के पद को लगातार कई वर्षो से सुशोभित कर रहे है. नेहा नर्सरी के व्यवस्थापक, इलाहाबाद नर्सरीमैन ऐसासिएशन के संरक्षक के पद को भी भली-भॉति निर्वहन कर रहे है. उनके कार्यो से प्रभावित होकर ही सम्पूर्ण भारत के लगभग सभी पत्रकार संघो के महासंगठन भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ ने उन्हें अपना संरक्षक नियुक्त किया जिसकी महती भूमिका को भली-भॉति श्री अग्रवाल अंजाम दे रहे है. समाज सेवा के क्षेत्र में भी आपका कोई सानी नही है. आपकी नर्सरी पर गुड़ खाओ पानी पीओ सेवा १९९७ से निरन्तर आपकी देख-रेख में संचालित हो रही है. जिससे भीषण गर्मी के महीनों में आम राहगीर, रिक्शे, टांगे, मजदूर से लेकर बड़े-बड़े अधिकारी तक अपनी प्यास बुझाने आते है. वैसे पानी की व्यवस्था को बारहो महीने रहती है. जब भी आप जाएगे राहगीर घड़े से पानी पीते नजर आएगे.

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद के पूर्व चीफ मैनेजर (ए एण्ड एम), पूर्व जोनल प्रतिनिधि (वि) उत्तर प्रदेश एवं बिहार जोन, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पूर्व चीफ एडवारटाइजमेंट मैनेजर सुन्दरम्, श्री अग्रवाल का पता हैः नेहा नर्सरी, हनुमान मंदिर मुख्य द्वार के पास, कमला नेहरु रोड, सिविल लाइन, इलाहाबाद-२११००१, उ०प्र० इलेक्ट्रानिक्स मेल है- arunagarwal_04@yahoo.com

सभी पाठको को दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएँ

हिंदी भाषी ही हिंदी का मजाक उड़ाते है:डॉ० राज

इलाहाबाद। "मैं पंजाबी भाषी हूँ, फिर भी मैं हिदी की रोटी खाती हूँ, हमारे लिए तो रोज हिंदी दिवस है। जैसा मेरा परिवार के सदस्यों के साथ लगाव है, अपने नाते रिश्तेदारों के साथ है, अपने मित्रों के साथ है वैसा ही रिश्ता मेरा हिंदी के साथ है। सरकारी विभाग तो हिंदी के नाम पर प्रोपोगंडा करते है। चाय-नाश्ता किए, मौज उड़ाए और चल दिए। हिंदी भाषी ही हिंदी का मजाक उड़ाते है।" उक्त बातें जापान के सम्राट से सम्मानित हो चुकी, भारत जापान सांस्कृतिक मंच की अध्यक्ष, एवं विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की संरक्षिका डॉ. राज बुद्धिराजा ने संस्थान द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह में कही।

संस्था के सचिव व संपादक विश्व स्नेह समाज गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने कहा-'हिंदी के विकास के लिए लोगों को समर्पित भाव काम करना होगा। हिंदी किसी की मोहताज नहीं रहे इसके लिए तत्परता व सक्रियता की आवश्यकता है। जिस हिंदी को सूर, कबीर, तुलसी और जायसी जैसे कवि मिलें हो उस हिन्दी को कौन मार सकता है। हिन्दी न कभी मरी थी, न कभी मरेगी। आगरा से पधारी संस्थान की कार्यसमिति सदस्य व प्रवक्ता डॉ० सरोज गुप्ता ने कहा-'लोगों को आगे आना चाहिए और राजनैतिक गुलामी की तरह हिन्दी भाषा को गुलामी से मुक्त कराने की दिशा में प्रयास करना चाहिए।'

प्रतापगढ़ से पधारे संस्था के सदस्य बृजेन्द्र कुमार द्विवेदी ने कहा-जो आज शासन में है, या कल शासन में आने वाले है, सबके सब अंग्रेजी के गुलाम है। उनमें हिंदी भाषा का प्रेम नाम मात्र का नहीं रह गया है।'

कार्यक्रम में संयुक्त सचिव ईश्वर शरण शुक्ल, श्रीमती जया, अशोक गुप्ता सहित तमाम हिंदी सेवी उपस्थित थे।

मोबाइल बंद करेंगे कार का दरवाजा

अब मोबाइल फोन हमारे रिमोट कंट्रोल का काम भी करेंगे. दरअसल इस कॉन्सेप्ट पर हाल ही में निसान लिमिटेड,

एनटीटी डोकोमो इनकारपोरेशन और शार्प कारपोरेशन से अपने नये फोन की घोषणा की है. इस कंपनी ने एक ऐसा मोबाइल फोन हैडसेट डेवलप किया है, जिसमें इंटेलिजेंट की सिस्टम काम करेगा. इसकी की आपको ऑटोमोबाइल्स को हैंडल करने में भी मदद करेगी. यह अपने आपमें विश्व का पहला ऐसा मोबाइल होगा. अब तक इंटेलिजेंट की सिस्टम कुछ व्हीकल्स में ही आ रहा था, पर अब यह मोबाइल फोन के हैंडसेट में भी दिखाई देगा. यह टू वे वायरलेस कम्युनिकेशन पर आधारित तकनीक पर काम करेगा. इस तरह आप अपनी कार का दरवाजा खोल या बंद कर सकेंगे, इंजन भी स्टार्ट कर सकेंगे. ये २००६ तक मार्केट में उपलब्ध हो पाएंगे.

कुछ खास है

पर्सनल ट्रैकिंग सिस्टम

अभिभावक अब यह पता लगा सकेंगे कि उनका बच्चा स्कूल पहुंचा या नहीं? एक कंपनी ने हाल में एक ऐसा उपकरण लांच किया है, जो घर या ऑफिस से बाहर गए व्यक्ति का ख्याल या उस पर नजर रखने में सक्षम है. ऑटो ट्रैक इंडिया कंपनी ने अपने इस अनूठे उत्पाद का नाम एम ट्रेक दिया है. मोबाइल की तरह दिखने वाला यह उपकरण इतना छोटा और हल्का है कि अभिभावक इसे अपने बच्चे के स्कूल बैग में रखा सकते है. जब कभी मुश्किल स्थिति आएगी तब बच्चा इस उपकरण का पैनिक बटन दबाकर अपने अभिभावक के फोन पर कॉल कर सकता है. अगर किसी कारण से वे फोन नहीं उठा

सके, तो यह उपकरण तब तक फोन करता रहेगा जब तक वे फोन न उठा लें. एम ट्रेक बेतार दूरसंचार और सेटेलाइट नेटवर्क के जरिए काम करता है. यही नहीं यह सिस्टम कॉरपोरेट जगत के लिए भी मददगार साबित हो कसता है. कोई कंपनी अपने सेल्स कर्मचारियों को इसके जरिए ट्रैक कर सकती है. सेना और पुलिस के लिए भी यह उपकरण उपयोगी साबित हो सकता है. किसी भी अभियान के दौरान, युद्ध के मैदान में और पेट्रोलिंग के समय कमांडर को पता रहेगा कि उसके सैनिक कहां है? कंपनी ने इस ट्रैकिंग सिस्टम की कीमत २१५०० रुपये रक्खी है. यह सिस्टम बड़े शहरों में काम कर रहे पेंरेटस के लिए बहुत काम का साबित होगा.

ग़ज़ल

डॉ. राजकुमारी शर्मा 'राज' की ग़ज़ले

१

ये मान लिया हम मे तज़ादत बहुत हैं।
मिलने के लिए फिर भी बजूहात बहुत है।।
मरने के लिए एक ही पल जैसे बहुत है।
जीने के लिए वैसे ही दिन-रात बहुत है।।
हिम्मत ने मिरा साथ अभी तक तो न छोड़ा।
गो सख़्त मिरी ज़ीस्त के हालात बहुत है।।
हर जख़्म तिरे नाम की देता है दुहाई।
तू दूर मगर तेरी इनायात बहुत है।।
इस अहद ने क्या तुमको दिया, याद करो तुम।
हम जैसे बुजुर्गो पे रिवायात बहुत हैं।।
ख़ुद अपने लिए कुछ भी नहीं चाहें खुदा से।
बस उनकी ही मुट्ठी में करामात बहुत है।।
काफ़ी है मिरे हक़ में उजालों की परिस्तिष।
जब 'राज' निफ़ाकत की जुल्मात बहुत है।।

२.

दर्दे-जुदाई जब भी छुएगा तन्हाई के दामन को।
आग, बषक्ले-आब छुएगी पुरवाई के दामन को।।
लोग बुराई के दामन में, ढूंढ रहे हैं सब्रों-क़रार।
और समेटे बैठे हैं हम अच्छाई के दामन को।।
दारों-रसन पर चढ़ कर परचम फहराएं कुर्बानीं का।
सर पर कफ़न की तरह जो बॉधें सच्चाई के दामन को।।
ख़ून आलूद निगाहों से हम देख रहे हैं दस्ते-रक़ीब।
सौंप गया जो नाम हमारे रूस्वाई के दामन को।।
हार न हिम्मत दीवाने दिल राह चला-चलने की।
व़क्त उड़ाकर ले जाएगा कठिनाई के दामन को।।
एक नहीं कितने ही मतलब लोग निकालेंगें, जिस दम।
उसकी बातें पा जाएंगी गहराई के दामन को।।
'राज' ज़माने की ऑखों में और चमक बढ़ जाएगी।
रंगे-मुहब्बत रॅग देगा जब दानाई के दामन को।।

३.

फैल जाए जो बात मीलों तक।
क़ैद वो क्यों रहे क़बीलों तक।।
उनके गुमनामियां ही हाथ आईं।
जो न पहुॅचें कभी वसीलो तक।।
रोकनी हैं तो रोक लो वरना।
आंधियां आ गई फ़सीलों तक।।
उसको टांगा गया बुलंदी पर।
कौन पहुॅचेगा उसकी कीलों तक।।
ये परिन्दे कहां पे उतरेंगे।
उनके पहरे हैं ख़ुष्क झीलों तक।।
कर न पाए रसाई हम जैसे।
षुहरतों के बुलंद टीलों तक।।
'राज' उनमें कभी न षामिल हो।
जो क़तारें मिलें सबीलों तक।।

४

जुल्मत में धिरे लोग उजालों से मिलेंगे।
जिस लम्हां भी पाकीज़ा ख़्यालों से मिलेगें।।
रौषन हैं ज़मीर उनका, अना उनकी मुनव्वर।
हर रोज़ वो नायाब मिसालों से मिलेंगें।।
आएगा हर इक लब पे फ़क़त नाम हमारा।
हर दौर में हम ऐसे हवालों से मिलेंगे।।
इस वक्त उरूज आपको करता हैं नुमायां।
क्या होगा कि जब आप ज़वालों से मिलेंगें।।
सुनने को तरस जाएंगे हम जिनके जवाबात।
हम षौक़ में कुछ ऐसे सवालों से मिलेंगे।।
उनको तो फ़क़त दष्त-नवर्दी की पड़ी है।
दीवानें कहीं पांव के छालों से मिलेगें।।
जज़्बों में जसारत को बढ़ाने की ग़रज़ से।
हम 'राज' ज़माने में जियलों से मिलेगें।।

५.

फूलों के साथ-साथ न षूलों की गुफ्तगूं।
क्या होगी कामयाब उसूलों की गुफ्तगूं।।
हासिल न हो सकेगा उसे कुछ हयात में।
करता रहेगा जो भी फ़िज़ूलों की गुफ़्तगू।।
फूलों का जिक्र छोड़ के बेबाकियों के साथ।
कुछ लोग कर रहे थे बबूलों की गुफ़्तगू।।
अपनी ही धुन में बढ़ता चला जाए आदमी।
सुनता नहीं ठहर के बगूलों की गुफ़्तगू।।
आंधी ने अपने हाथ बढ़ाए थे उस समय।
जिस वक़्त थी उरुज पें फूलों की गुफ़्तगू।।
हासिल तो कुछ भी 'राज' हुआ है न हो कभी।
ख़ुद करके अपने आपसे भूलों की गुफ्तगूं।।
++++++++++++++++++++++++++++++

स्नेह बाल मंच

उल्लू का वादा

बहुत पुरानी बात है, सुन्दर वन में बाहरी छोर पर संसारपुर नामक एक गांव था, जिसमें मंगल नामक एक किसान रहता था. मंगल ने इस पर अपने खेत में मटर की खेती की थी, फसल बहुत अच्छी आयी थी तथा सभी पौधे हरी-हरी फलियों से लदे थे. मंगल किसान व उसका परिवार अपनी फसल देखकर बहुत खुश होते. जब फलियों में दाने पड़ गये जो मंगल अपने खेत की रखवाली के लिए रात में खेत पर सोने लगा. परन्तु जब से मटर के दाने खाने लायक हुए हे, पता नहीं कौन रात मे आकर फलियां खा जाता. यह सब देख मंगल व उसका परिवार बहुत दुःखी रख्ने लगा तथा रात भर सारा परिवार लालटेन व अलाव जलाकर खेत के पास बैठा रहता, परन्तु चोर बहुत होशियार था, उनकी लाख सतर्कता के बाद भी उनके हाथ नहीं आता और रात में मटर चट कर जाता. दुःखी और निराश मंगल अगले दिन अपने पड़ोसियों की भी लालटेन मांग लाया तथा खेत में चारों तरफ जलाकर रख दिया, साथ ही कई स्थलों पर अलाव भी जला दिया तथा रात भर खेत के चारों तरफ मेड़ पर टहलता रहा, परन्तु रात को कोई नहीं आया, लेकिन सुबह जब मंगल ने खेत देखा तो बीच में काफी फलियों के दाने गायब पाये. फलियों की दशा देखकर मंगल समझ गया कि यह करतूत जरुर सुन्दर वन के किसी शेतान चूहे की है. वह खेत में चूहे की बिल तलाशने लगा परन्तु नहीं पा सका. थक-हारकर उदास मंगल खेत के पास स्थित आम के पेड़ के नीचे बैठ गया. तभी उधर से बूढ़ा चकमक उल्लू उड़ता गुजरा. मंगल को उदास देखकर उल्लू उसके पास आया, और उसकी उदासी का कारण पूछा. मंगल ने उसे सारी बात बताई तो उसने कहा कि घबराओं नहीं, आज रात को तुम आराम से पेड़ के नीचे बैठना, मैं पेड़ की झुरमुट में छिपकर बैठूंगा और रात में जैसे ही वह चूहा आयेगा, मैं उसे पंजे में दबोच लूंगा. अपने कहे के मुताबिक चकमक उल्लू सायं होते ही आ गया और आम के पेड़ के झुरमुठ में बैठ गया. जब रात गहरी हो गई तो चकमक उल्लू ने देखा कि खेत में बीच में मटर में कुछ पौधे हिल रहे है. चकमक ने तुरन्त अपनी निगाह वहीं गड़ा दी. खेत में बनी बिल से निकलकर मोटू चूहे ने इधर-उधर नजर दौड़ाई, फिर निश्चित होकर मटर खाने लगा, तभी चकमक उल्लू ने झपट्टा मारकर मोटू चूहे को अपने पंजे में दबोच लिया, मोटू चूहा चीं-चींकर रोने लगा तथा उल्लू से अपने प्राणों की भीख मांगने लगा, परन्तु उल्लू ने उसकी एक न सुनी, उसके सिर पर अपनी नुकीली चोंच से प्रहार कर, घायल कर दिया मंगल किसान के सामने पटक दिया. उसके प्राण पखेरु उड़ गए. मंगल किसान की आंखों में खुशी की आंसू छलक गये, उसने चकमक उल्लू का बहुत धन्यबाद दिया, चकमक ने कहा कि घबराओं नहीं अब मैं तुम्हारे खेतों की रखवाली करूंगा. कहा जाता है कि चकमक उल्लू द्वारा मंगल किसान से किये गये वादे के कारण ही आज भी उल्लू प्रजाति के पक्षी रात भर जागकर खेतों के पास स्थित पेड़ों, बिजली के तारों आदि पर बैठकर फसलों की चूहों से रक्षा करते है.

राजेन्द्र कृष्ण श्रीवास्तव, लखनऊ

प्रिय भैया/बहिनों

आप लोगों को कहॉनी पढ़ना तो अच्छा लगता ही होगा. इस बार एक कहानी आप लोगों के लिए दे रही हूँ. आशा है पंसद आएगी. आप लोगों को पसंद आये तो अपनी बहन को जरुर लिखिएगा.

आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

तरुण सांस्कृतिक चेतना समिति
मऊ-शेरपुर, समस्तीपुर, बिहार

२७ वॉ महाधिवेशन

१४ से १६ नवंबर २००८

कार्यक्रमः

०सदस्य सभा ० लोकार्पण सभा ० सम्मान-सभा
० अ.भा.ग्रामीण कवि सम्मेलन, ० संगीत

महेन्द्र कुमार शास्त्री **स्वागताध्यक्ष** | आचार्य लक्ष्मीदास **अध्यक्ष** | सीताराम शेरपुरी **महासचिव**

कविताएं

दशहरे की शुभकामना

पूर्व इसके कागजी रावण जलाओ।
मुग्ध होकर राम की जयकार गाओ।।
विस्मरण कर दो घृणा अपने हृदय से,
हो सके तो द्वेष को मन से मिटाओ।
क्या बहुत अच्छे हो तुम, या मै बुरा हूँ
आईने को प्रश्न यह पढ़कर सुनाओ।
भाग्य में जो भी लिखा वो ही मिलेगा,
स्मरण कर राम, पग अपना बढाओ।
चेहरा अपना भी दर्पण में निहारो,
फिर किसी की ओर तुम उंगली उठाओ।
है हृदय हितेश की यह भावनांए।
स्वयं में झांको, न जग अवगुण गिनाओ।
यह दशहरे की तुम्हें शुभकामना
फलो-फूलों ढेर सारी खुशी पाओ।।

हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर

शुभ कामनायें दिवाली में

आपको शुभकामनायें दिवाली में,
घोर अन्धियारे हटाये दिवाली में।
माल मेवा आप खाये दिवाली में,
भूखे को रोटी खिलायें दिवाली में।
जिनका सारा श्रम हमारे लिये ही है,
उनको सीने से लगाये दीवाली में।
झंडो के पण्डों से प्यारे बचके रहना,
और नये धोखे न खाये दिवाली में।
जायेगा इक-आयेगा इक यही क्रम है,
माफिया से अब बचाये दिवाली में।
मंहगाई ने जीना किया मुश्किल हमारा,
प्याज से आंसू न आये दिवाली में।

ओम रायजादा, कटनी, म.प्र.

बदलाव

एक विवश इन्सान
खूनी पगडंडी पर चलता
भूखा नंगा बेबस, असहाय
फटी कम्बल ओढ़े
फुटपाथ पर जीवन
जीने को वह विवश है।
आजादी के साठ साल बाद भी
कोई बदलाव नहीं है
उसके जीवन में।
वोटों के अधिकार ने
उसे ठगा है.
वही फटा कम्बल
फुटपाथी जिन्दगी
जीने को लाचार है।
आजादी के नाम पर
यह एक विडम्बना है

डॉ० श्याम मनोहर व्यास, राजस्थान

गीत

ओ मंजिल तक जाने वाले
राहों से तू बैर न करना
तुम को पथ में शूल मिलेंगे
लेकिन उन पर चलना होगा।
फूलों पर चलने वालों का
अब इतिहास बदलना होगा।।
जिस पथ पे संकट न आवें
उस पथ से तू सैर न करना।
तुझको चलना एक राह पर
दुःख की चल या सुख की ले ले।
सुख की चलती आयी दुनिया।
तूं केवल दुःक्ष की ही चल ले।।
दुःख की होती कठिन राह पर
बिन फूंके तूं पैर न धरना।
दुःख के पथ पर चलने वाले
सदा अकेले ही चलते हैं।
पा जाते जब सुख का सागर
तब दुनियां वाले जलते हैं।।
बढ़ता जा तूं निडर अकेला
पद ठिइकें तूं ठैर न करना।।

हरिचरण वारिज, भोपाल, म.प्र.

क्षणिकायें

आकाश,
कौन कर सका पर्दाफाश,
अंतरिक्ष में आदमी उगाने चला पलाश।

सपने,
अनहोनी लगे दिखने,
सच की चिन्ता में ऑख लगे जगने

आज का युग,
जितना चुग सके चुग,
अवसरवादिता, भ्रष्टाचार और चापलूसी
का नाम है कलियुग।

प्यार,
दिल के सामने दिमाग की हार,
जागरण नकद, नींद उधार।

आतंकवाद,
इंसानियत पर हैवानियत का जेहाद,
अल्पसंख्यकों का उन्माद!

आरक्षण,
प्रतिभाओं का भक्षण,
अयोग्यता को संरक्षण।

तुष्टिकरण,
खोलकर रेखा नियंत्रण,
आतंकवादियों को निमंत्रण।

हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर

घाव हुए है

कुछ ऐसे पथराव हुए हैं
घाव के भीतर घाव हुए हैं
हर आहट पहले जैसी है
चीखों में बदलाव हुए है
मॅहगाई के महा-समर में
सबके ऊँचे भाव हुए है
बेपरवा भाई से है भाई
रिश्ते सर्द अलाव हुए है
तार-तार होकर सब टूटे
जब घर में टकराव हुए हैं
समय की गुत्थी सुलझाने में
और अधिक उलझाव हुए है
दुश्मन से भी किया न जाये
मुझसे वो बर्ताव हुए हैं
मिलजुल कर बोलें बतियॉए
दिल पर बहुत दबाव हुए है

डॉ० मधुर नज्मी, मऊ, उ०प्र०

साहित्य समाचार

श्री हरिचरण वारिज को काव्य रत्नाकर

निर्दलीय प्रकाशन के स्थापना दिवस पर भोपाल स्थित मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मायाराम सुरजन भवन में वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार श्री गोवर्धन दास मेहता द्वारा अपने पिताश्री पंडित चतुर्भुज मेहता की स्मृति में स्थापित 'काव्य रत्नाकर' अलंकरण राजधानी के वरिष्ठ गीतकार श्री हरिचरण वारिज को जिलाध्यक्ष सत्र न्यायाधीश कुंवर सुरेन्द्र सिंह सिसौदिया, कटनी के हाथों किया गया. कार्यक्रम में भोपाल के महापौर श्री सुनील सूद ने एक हजार रुपये की सम्मान राशि एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता सम्मेलन के अध्यक्ष श्री अक्षय कुमार जैन ने की. इस अवसर पर निर्दलीय के मुख्य सलाहकार श्री हुकुम सिंह 'विकल' विशेष रुप से मंच पर उपस्थित थे. आरम्भ में निर्दलीय प्रकाशन की ओर से श्री कैलाश श्रीवास्तव आदमी ने स्वागत वक्तव्य दिया.

सम्मानार्थ प्रविष्ट्रि आमंत्रित

हिन्दी विकास संस्थान अपने छठे वार्षिक अधिवेशन अप्रैल २००९ में वरिष्ठ हिंदी सेवियों तथा साहित्यकारों से उनके सम्मानार्थ ३१ जनवरी २००९ तक प्रविष्टि आमंत्रित करताा है. सम्मान निम्न है-बाबा दीप सिंह सम्मान, बलवीर सिंह सम्मान, पं. अवधेश नारायण त्रिपाठी स्मृति सम्मान, सुरेन्द्र कौर स्मृति सम्मान, सरस्वती देवी पाण्डेय स्मृति सम्मान, प्रहलाद सिंह स्मृति सम्मान तथा साहित्य गौरव सम्मान. प्रतिभागी अपना जीवन परिचय, दो चित्र, दो पोस्ट कार्ड, अपनी उत्कृष्ट पुस्तक दो प्रतिं, तथा ३५ रुपये का डाक टिकट सहित भेजें.

सुशील कुमार पाण्डेय,
निदेशक, विन्ध्यवासिनी हिन्दी विकास संस्थान, ई-२०६, सी, कृष्ण विहार, नईदिल्ली-४१

साहित्यिक सॉस्कृतिक कला संगम अकादमी

परियावॉ, प्रतापगढ़, उ.प्र.: २२९४१६

विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी अपने २८वें अधिवेशन में चयनित साहित्यकारों, कलाकारों तथा पत्रकारों को निम्न सम्मानों से अलंकृत करेगा. विवेकानन्द सम्मान, कबीर सम्मान, प्रज्ञा भारती, साहित्य मार्तण्ड, कला मार्तण्ड, पत्रकार मार्तण्ड, रोहित कुमार माथुर स्मृति सम्मान तथा हिन्दी गरिमा सम्मान. मानदोपाधि साहित्य वाचस्पति, साहित्य वारिधि तथा साहित्य महोपाध्याय डाक टिकट लगा लिफाफा भेज कर मंगवायें.

प्रतिभागी अपना जीवन परिचय, दो चित्र, दो पोस्ट कार्ड, अपनी उत्कृष्ट पुस्तक दो प्रतिं, तथा ३५ रुपये का डाक टिकट सहित सम्मानार्थ ३१ जनवरी २००९ तक भेजें उक्त जानकारी अकादमी के सचिव श्री वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' ने दी.

ज्ञानचंद्र मर्मज्ञ को विशिष्ट हिंदी सेवी सम्मान

हिंदी सेवा के लिए अहिन्दी भाषी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाने वाला यह सम्मान, २६ अगस्त १९५९ को जन्में, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में स्तम्भ लेखन कर रहे है, राजीव गांधी राष्ट्रीय एकता सम्मान सहित देश के करीब २० संस्थाओं से सम्मानित, ज्ञानचन्द्र मर्मज्ञ, बगलौर, कर्नाटक को विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा बंगलौर में एक सादे समारोह में प्रदान किया गया. यह सम्मान उन्हें हिन्दी प्रचार वाणी की प्रधान सम्पादिका सुश्री बी.एस.शांताबाई एवं सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने प्रदान किया.

डॉ० इन्दूभषण मिश्र को साहित्य गौरव

१४ अक्टूबर १९५९ को जन्में, हिन्दी, दर्शनशास्त्र, संस्कृत से परास्नातक, डी.लिट-हिंदी, पी.एच.डी.-संस्कृत, विद्या सागर, साहित्य रत्न, साहित्य शिरोमणि, कवि रत्न, भारत गौरव सहित करीब २५ संस्थाओं से सम्मानित हो चुके, अंगमासी के संपादक, ६ किताबें हिन्दी, दो अंगिका में, १५ किताबें हिन्दी प्रकाशनाधीन, निम्न अवर शिक्षा सेवा, बिहार में कार्यरत डॉ. इन्दूभूषण मिश्र 'देवेन्द्रु', भागलपुर, बिहार को एक सादे समारोह में इलाहाबाद में विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के द्वारा साहित्य गौरव की उपाधि से आभूषित किया गया.

कवि वंशीलाल 'पारस' समलंकृत

१४ सितम्बर २००८ को हिन्दी दिवस के अवसर पर जिला साहित्यकार परिषद, भीलवाड़ा द्वारा आयोज्य कार्यक्रम में रससिद्ध कवि एवं मधुर गीतकार श्री वंशीलाल पारस नियामक सामयिकी, (साहित्यिक संस्था एवं लघुपत्रिका)को पंगड़ी बंधवाकर, शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर अभिनन्दित किया गया.

स्वास्थ्य

सर्दियों का खास तोहफा है मूंगफली

मूंगफली निर्धन लोगों के लिए सूखे मेवे से कम नही है. सर्दियों में यह महंगे सूखे मेवों के एक सस्ते विकल्प का काम देती है. जिसे धनी वर्ग के लोग भी बड़े चाव से खाते है. मूंगफली को सर्दियों का खास तोहफा भी कहा जा सकता है. शारीरिक विकास के लिए प्रोटीन की आवश्यकता रहती है और यह प्रोटीन मूंगफली से प्राप्त की जा सकती है. वस्तुतः मूंगफली प्रोटीन का ही स्रोत है जो शरीर के लिए आवश्यक है. मूंगफली को संस्कृत में मुसुम्बिका, गुजराती में माण्डवी, मराठी में मुंगाची, तमिल में बेरकदलाई और फारसी में मुलियन कहा जाता है. मूंगफली का लेटिन नाम एराचिस हाईपोजिया है.

१०० ग्राम मूंगफली का रासायनिक विश्लेषण-प्रोटीन २५.३ ग्राम, वसा ४०.१ ग्राम, कार्बोहाइड्रेट २६.१ ग्राम, कैल्शियम ६० मिली ग्राम, लौह तत्व २.८ मिली ग्राम, कैरोटीन ३७ माइक्रोग्राम. इसके अलावा मैग्नीशियम, मैग्गीज, आयोडीन, तांबा व पोटेशियम आदि खनिज तत्व भी मूंगफली में पाये जाते है. सौ ग्राम मूंगफली से ५६७ कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है. मूंगफली की तासीर गर्म है.

मूंगफली के औषधीय गुण

- कच्ची मूंगफली खाने से मां के स्तनों में दूध की वृद्धि होती है.
- मूंगफली का सेवन करने से चोट की सूजन जल्दी ठीक हो जाती है.
- मूंगफली के आटे में मौजूद शर्करा मोटापा कम करती है.
- मूंगफली का तेल भी गुणकारी है. यह तेल क्षय रोगियों के लिए लाभकारी है.

केवल एक चमत्कारी गोली कम करती है ब्लड प्रेशर और मोटापा

केडिला दवा कंपनी के सूत्रों के अनुसार उसके रिसर्च संस्थानों में इस वंडर पिल का क्लीनिकल ट्रायल चल रहा है. शुरु में देश के चुनिंदा शहरो में यह पहुचाई जाएगी. दवा के पालीपेक का ट्रायल २००० में निर्माण के बाद से ४५ से ८० वर्ष की आयु समूह के लोग जो ऐसे एक दो रोगों के शिकार होते है, पर किया जा रहा है. जानकारी के अनुसार आठ फार्मुलों वाली पांच दवाओं के काम्बीनेशन से बनी इस चमत्कारी गोली में कोलेस्ट्राल स्तर हाई ब्लड प्रेशर एवं मोटापा कम करने की दवाई एक साथ मिलाई गई है. फेटिस के डॉ० राजीव गुप्ता ने कहा कि इन पांच दवाओं के साइड इफेक्ट एवं अन्य परिणामों पर बेंगलूर स्थित सेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट में सघन परीक्षण चल रहा है.

++++++++++++++++++++

मिथिलेश द्विवेदी को 'पत्रकार श्री'

१७ जनवरी १९४६ को जन्में, भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय सरंक्षक एवं प्रेस क्लब, डाला के सरंक्षक, आज, जागरण, राष्ट्रीय सहारा, स्वतंत्र भारत, समाचार ज्योति के प्रतिनिधि १९७२ से पत्रकारिता एवं लेखन में सक्रिय, एक दर्जन से भी अधिक संस्थाओं से सम्मानित श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, सोनभद्र, उ. प्र. को पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा 'पत्रकार श्री' सम्मान से एक कार्यक्रम में सम्मानित किया गया. यह सम्मान उन्हें इलाहाबाद दूरदर्शन केन्द्र के वरिष्ठ केन्द्र निदेशक श्री श्याम विद्यार्थी, पर्यावरण विद् एवं अंतर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार के संपादक श्री अरुण कुमार अग्रवाल, संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने संयुक्त रुप से सम्मान पत्र, अंगवस्त्रम, स्मृति चिन्ह व उपहार

स्वरुप पुस्तकें भेंट कर सम्मानित किया. इस अवसर पर भा.रा.प.म. के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय, संस्थान के सं.सचिव ईश्वर शरण शुक्ल, कार्यसमिति सदस्य कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, वीरेन्द्र कुमार दुबे, एस. के.तिवारी, वाह क्या बात है संपादक डॉ० ए.के.गुप्ता आदि उपस्थित थे.

चिट्ठी आई है

आपने बड़ा परिश्रम किया

आपकी यशस्वी पत्रिका का डॉ० तारा सिंह विशेषांक मिला. धन्यबाद. आपने इस अंक में बड़ा परिश्रम तथा दूरदर्शिता का परिचय दिया है. एक साधारण कवयित्री को जन-जन का कवि बताकर हिन्दी साहित्य में श्री वृद्धि किया है. संभव है अब उन पर समीक्षकों की नजर पड़े. बहन ताराजी को बधाई दें दे. उनसे परिचय हुआ इस स्तम्भ के माध्यम से.

डॉ० राजेश्वरी शांडिल्य, लखनउ

++++++++++++++++++++++++

लोककल्याणी सक्रियता दिखाते है

श्रद्धेय सम्पादक जी

आपके अथक परिश्रम से सम्पादित विश्व स्नेह समाज का फरवरी अंक मिला. डॉ० तारा सिंह के संदर्भ में यह विशेषांक हिन्दी प्रेमियों के लिए उपलब्धि बनेगी. मेरा अपा दृढ़ विश्वास है. वस्तुतः हिन्दी के लिए साहित्य सेवा एक कंटकाकीर्ण पथ दीर्घकाल से रहा है. केवल लोक कल्याण की भावना से प्रभावित जन ही इस दिशा में सक्रियता का बीड़ा उठाते है. इसमें दो राय नहीं है.

मृदुल मोहन अवधिया,जबलपुर, म०प्र०

++++++++++++++++++++++++

स्नेह की अविरल धारा

विश्व स्नेह फैलाये जग में,
स्नेह की अविरल धारा
जनतंत्र बने मजबूत जगत में,
मिट जाये अंधियारा
विचार और अभिव्यक्ति की
मिट जायें सब कारा
विश्व स्नेह हो संचारित जग में,
यही लगाये नारा।

आपका वैचारिक आन्दोलन अविरल चलता रहे तथा यह आचरणिक आन्दोलन में भी तब्दील हो सके. यही कामना.

संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी, मथुरा, उ०प्र०

++++++++++++++++++++++++

ऐसा लगा जीवन फिर से लौट आया

गत एक वर्ष से हृदयाघात से पीड़ित हूँ. ऐसे विकट हालात में आपकी पत्रिका हस्तगत हुई तो ऐसे लगा कि जीवन फिर से लौट आया है. मन प्रसन्न हो उठा. अतः आपको लिखने का लोभ न छोड़ पाया. भगवान से प्रार्थना है कि आप पत्रिका के प्रकाशन में नए से नए आयाम स्थाापित करें. सफलता आपके कदम चूमती रहे.

रोहित यादव, हरियाणा

++++++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज का अप्रैल ०८ अंक प्राप्त हुआ, धन्यबाद. श्री बी.के.अग्रवाल का 'आदाब अर्ज' श्री पवन चौधरी की लघुकथाएं, श्री दीवाना हिन्दुस्तानी का गीत, श्री प्रेमोद पुष्कर की ग़ज़ल आदि रचनाओं के चयन एवं सफल सम्पादन हेतु आपको अनेकानेक साधुवाद.

डॉ० विनय कुमार मालवीय, इलाहाबाद

++++++++++++++++++++++++

आपने अल्प काल में ही ख्याति प्राप्त कर ली है

आपकी हिन्दी साहित्य को समर्पित 'मुम्बई की वरिष्ठ कवियित्री डॉ० तारा सिंह विशेषांक पत्रिका प्राप्त हुई. आज इस प्रकार की योजनाबद्ध हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि के लिए इस प्रकार की पत्रिकाओं की महती आवश्यकता है. समय-समय पर आपकी संस्था द्वारा कवियों, कहानीकारों, पत्रकारों काा सम्मान करना वो स्तुत्य कार्य है.

आपकी संस्था द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका उत्तरोत्तर अपनी ऊंचाइयों को प्राप्त करती रहे और हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान के गौरव बढ़ाती रहे. आपने अल्प काल में ही जो ख्याति प्राप्त की है वह संस्था का बहुत बड़ा कार्य है. पत्रिका का प्रकाशन इस महंगाई में जीवट कार्य है.

लोकप्रिय वरिष्ठ कवियित्री डॉ० तारा सिंह के जीवन का सारा काा सारा भाग हिन्दी को समर्पित रहा है. डॉ० तारा सिंह को कौन नहीं जानता? मैंने इन्हें अनेक बार देखा-समझा तथा कवि-मंचों में सहभागी रहा, ऐसे यशस्वी का विशेषांक प्रशंसनीय है. मैं डॉ० तारा सिंह के दीर्घजीवी होने की कामना व पत्रिका के उत्तरोत्तर जन-जन की गलहार बनने के साथ. पत्रिका उज्जवल भविष्य की कामना के साथ सम्पादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई.

डॉ०शारदाप्रसादसुमन,फिरोजाबाद, उ०प्र०

++++++++++++++++++++++++

अप्रैल अंक डाक से प्राप्त हुआ. पढ़कर प्रसन्नता हुई. सम्पूर्ण पत्रिका पढ़ गया हूँ. अंक के सभी स्तम्भ सराहनीय है. विश्व स्नेह समाज और श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को शुभकामनायें.

निशानाथ अवस्थी , हरदोई

++++++++++++++++++++++++

आरक्षण मानवता विरुद्ध

वर्तमान में लागू आरक्षण जातिवाद को बढ़ावा देने वाला है. यदि एक परिवार को जीवन में एक ही बार आरक्षण दिया जाय तो इसका लाभ गरीबों और वंचितों को भी होगा और आरक्षण का राजनैतिक रोग अपने आप ही क्रमशः समाप्त हो जायेगा. मनुष्य-मनुष्य में किसी भी आधार पर भेदभाव करना मानवता के विरुद्ध है.

उपमा भारद्वाज, नई दिल्ली

++++++++++++++++++++++++

बन्धुवर सादर बंदे

विश्व स्नेह समाज का अप्रैल ०८ का अंक मिला. साहित्य मेला का समाचार आपने सारगर्भित ढंग से दिया. इस मेले द्वारा आप द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर की जा रही गतिविधियों की देश के अन्य क्षेत्रों को भी मिल रही है. यह आपका प्रयास सदैव सार्थकता की ओर अग्रसर होता जाए. प्रभु से यही हमारी प्रार्थना है.

ऋषि भामचन्द्र कौशिक,
संपादक, अजन्ता, हैदराबाद

++++++++++++++++++++++++

विश्व को अपने स्नेह से बांधे समाज का यह रुप अच्छा लगा

पत्रिका का अंक मिला, तीर्थ राज प्रयाग इतिहास के आइने में, कृष्ण कुमार यादव का आदिकाल से प्रारम्भ होकर आज तक का ऐतिहासिक मनोरम चित्रण है. यह जानकर भी प्रसन्नता हुई कि जामा मस्जिद से वेदमंत्र गूंजा था. एक दुर्लभ साहित्यकारा के रुप में पवन चौधरी 'मनमोजी' के बारे में प्रो० लाल चन्द्र गुप्त का लेख अच्छा लगा. कहानी मरीचिका, पुष्पा रघु, मेरा कसूर क्या है-अखिल के अतिरिक्त गीत, ग़ज़ल और कविताएं भी अच्छी लगी. विश्व को अपने स्नेह से बांधे समाज का यह रुप अच्छा लगा. शुभकामनाओं के साथ.

राजेन्द्र कृष्ण श्रीवास्तव,
लखनउ विश्वविद्यालय, लखनऊ

++++++++++++++++++++++++

प्रिय द्विवेदी जी सादर स्मरण।

मासिक तो मिलते कई,
अलग है स्नेह समाज
होनी-अनहोनी सभी,
दे देता है आज।।

मैंने इसमें आपके सद्प्रयासों के प्रति अपना प्यार उड़ेला है. इलाहाबाद ज्ञान-भूमि प्रयाग है. अनेक बार हिंदी साहित्य सम्मेलन के कार्यक्रमों में आया हूँ.

आपके स्नेहाधीन आपका ...अपना ही..

डॉ० कमलेश शर्मा, भोपाल, म.प्र.

++++++++++++++++++++++++

पत्रिका का जून ०८ अंक मिला. आपकी लेखनी और हिन्दी के लिये सद्प्रयास स्तुत्य है. **हरिचरण वारिज**, भोपाल, म.प्र.

++++++++++++++++++++++++

आप का कथन बिल्कुल सही है

आपके द्वारा प्रेषित हि.मा.विश्व स्नेह समाज का अंक प्राप्त हुआ. आभारी हूँ.

अपनी बात में आप का कथन बिल्कुल सही है कि 'आम आदमी घासफूस की तरह प्रतिदिन मारे जाते है, उनकी सुरक्षा से सरकार को कोई मतलब नहीं. आज घरों से महिलाओं का निकलना, ट्रेन में सफर करना खतरे से खाली नहीं है, यह हमारे जनतंत्र का मजाक नहीं तो और क्या है?'

पत्रिका में तीर्थराज प्रयागः इतिहास के आईने में, मानस में नारी का आर्दश, तथा पवन चौधरी मनमोजी एक दुर्लभ साहित्यकार, पठनीय आलेख है. इसके अतिरिक्त गीत, गजल, तथा कहांनिया भी रोचक है. डॉ० वृजेन्द्र सिंह बैरागी की पंक्तियां 'आवरा संत का आचरण आसुरी. पाप उर में रमा होठों पर बांसुरी.' समाज का नग्न चित्रण करती है. इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य, ज्योतिष और हास्य के स्तंभ भी सराहनीय है.

नन्द कुमार मनोचा 'वारिज', लखनऊ

++++++++++++++++++++++++

सम्मान्य पूज्य द्विवेदी जी

पत्रिका प्राप्त हुई. सम्पादकीय में पुलिस पर की गयी टिप्पणी सम-सामयिक एवं पठनीय है. अन्य स्तम्भ भी महत्वपूर्ण है.

अध्यक्ष, लोकभारती संस्थान,सुल्तानपुर,उप्र.

सफल अनुक्षण साहित्य यज्ञ के रुप में किया है

श्रीयुत सम्पादक जी

सस्नेह हरि शरणम्!

आपके द्वारा प्रेषित मुबंई की वरिष्ठ कवियित्री तारा सिंह विशेषांक प्राप्त हुआ है. उनको विभिन्न विद्वानों के उद्गारों की उनके प्रति अभिव्यक्ति को स्थान देकर अपने को गौरान्वित किया है. ऐसी मशहूर, ख्याति प्राप्त कवियित्री से समाज को परिचित कराने की जो सफल अनुक्षण साहित्य यज्ञ के रुप में किया है उसके लिए मेरी ओर से बहुत-२ साधुवाद एवं धन्यवाद स्वीकारें. इस अंक में छपा सदस्यता फार्म भी देखा तथा अन्य योजनाएं भी पढ़ी आप धन्य है आपके सहयोगी धन्य है, जो इतने बड़े सेवा कार्यो में लगे है. इसके लिए पुनः आप सभी को बधाई. यथा शक्ति समयानुसार सहयोग करुंगा शेष पुनश्च.

रमेश चन्द्र त्रिवेदी पुष्प, पीलीभीत, उ०प्र०

++++++++++++++++++++++++

श्रद्धेय सम्पादक महोदय,

आपकी कृपा से पत्रिका मिली. पढ़कर मन गदगद हो उठा. नूतन जानकारियों से भरपूर सामग्रियों के साथ पत्रिका पाठकों को परोसना आप जैसे साहसी संपादक का ही कार्य हो सकता है. विशेष सम्पर्क बनाये रखने की गुजारिश करता हूँ.

उपेन्द्र प्रसाद सिंह, मुंगेर, बिहार

++++++++++++++++++++++++

आपके श्रेष्ठ संपादन में पत्रिका विश्व में स्नेह का सन्देश दे रही है

पत्रिका का जून अंक मिला पं. मोहन तिवारी आनन्द की आदाब अर्ज रचना दिल को छू गई. संपादकीय में पुलिस विभाग के कार्यो पर व्यंगात्मक टिप्पणी सामयिक लगी. साहित्य समाचार पुस्तक प्राप्ति, समीक्षा स्तम्भ पढ़कर राष्ट्र के ख्यातिनाम रचनाकारों की रचनाओं व उन पर प्राप्त सम्मानों से रुबरु करवाने हेतु धन्यवाद.

स्नेह बाल मेंच में आप जिन प्रतिभाओं को मासिक में छापते है उनका पता व फोन/मों. न. भी लिखा करें ताकि पाठक उन्हें बधाई दे, उनका सहयोग करें तो सहायता प्राप्त होगी. आपके श्रेष्ठ संपादन में विश्व स्नेह समाज संपूर्ण विश्व में स्नेह का सन्देश दे रही है. अंक संग्रहणीय है.

राजेश कुमार पुरोहित, भवानीमण्डी

++++++++++++++++++++++++

पारदर्शी-कुण्डली

जितनी सॉसे शेष है, ले लेगें श्रीमान।
लगे 'पारदर्शी नहीं, आयुष का अनुमाान।।
आयुष का अनुमाना, ज्योतिष लगा न पाए।
जन्म-मृत्यु का खेल, किसी के समझ न आए।।
फॉकालोजी समचार पत्रों में कितनी?
राशिफलों में सदा, छपा करती है जितनी।।

छन्दराज ऊँ पारदर्शी, उदयपुर,राजस्थान

++++++++++++++++++++++++

सही मायने में हिंदी की सेवा आप हृदय से कर रहे है

आदरणीय द्विवेदी जी

आपकी प्रिय पत्रिका विश्व स्नेह समाज का जून ०८ अंक मिला. धन्यवाद

पत्रिका में संपादकीय पुलिस विभाग का काम बदल गया है बहुत अच्छा लगा. इस लेख में आपने वर्तमान पुलिस के चेहरे को बेनकाब किया है. इसके बावजूद पुलिस महकमें की सेहत पर कोई असर पड़ने वाला नहीं है.

विविध साहित्य विधा से भरपूर आपकी पत्रिका हरवर्ग के लिए पठनीय है. कम कीमत में इतनी सामग्री उपलब्ध कराना बड़ा ही आश्चर्य जनक लगता है. सही मायने में हिंदी की सेवा आप हृदय से कर रहे है. कविता, गीत, गजल, कहानी, लघु कथाएं सभी कुछ तो है आपकी पत्रिका में. पत्रिका में दिन-प्रतिदिन निखार आ रहा है. लगे रहिए.

राम सहाय वर्मा, नोएडा

++++++++++++++++++++++++

परम श्रद्धेय श्रीमान गोकुलेश्वर द्विवेदीजी आपकी पत्रिका व संस्थान से परिचित साप्ताहिक तुमुल तुफानी के माध्यम से हुआ.

लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर', छतरपुर, म.प्र.

++++++++++++++++++++++

पत्रिका आपको कैसी लगी? क्या सुधार किया जाए? क्या कमिया है? इस बारे में आपके विचारों का स्वागत है

संपादक

लघु कथाएं

भरोसा

रेल के पटरियन का बीचे एगो आदमी के जूठ-काठ बीन-बीन के खात देखि के हमरा मोह लागि गइल आ हम अपना टिफिन में से दू गो रोटी निकालि के ओकरा कावर बढ़ावत कहनीं-ल हई खा ल. ऊ हमरा हाथ से रोटी ले लेलस. लेला के बाद सूंघलस आ फेनु घूमा के फेंकि देलस. तनी खिसिआइले ऊँचे आवाज में बोलल-'एह में जहर-माहूर होई तब?' आ फेनु ओइसहीं पटरियन के बीचे गिरल जूठन के बीन-बीन खाये लागल. हमरा त कठमुरकी लागि गइल रहे.

डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा, बिहार

+++++++++++++++++++++++

शराब

वह अपनी लड़की के लिए वर देखने गये थे. साथ में परिवार के दो-तीन सदस्यों के अलावा कुछ अन्य लोग भी थे. लड़के वालों के यहाँ पहुँचने पर उनका शानदार स्वागत किया गया. नाश्ता-भोजन में एक से बढ़कर एक लजीज व्यंजन थे. उनकी आंखे फटी की फटी रह गयी थी उन्होंने ऐसे स्वागत की उम्मीद कहीं से भी नहीं की थी. फिर उन्होंने भी मेजवानों की खातिरदारी की प्रशंसा करने में कोई कंजूसी नहीं दिखायी. लेकिन फिर भी उनके मनमें एक कसक जरुर रह गयी थी.

घर लौटने पर घरवालों तथा अन्य मिलने वालों ने उनसे वहाँ के हालचाल पूछे और कहा कि खातिरदारी कैसी रही? तो उनका स्पष्ट उत्तर था कि वैसे तो सब कुछ ठीक ठाक था. नाश्ते में बिस्कुट और तमाम तरह की मिठाईयां और भोजन में एक से बढ़कर एक स्वादिष्ट लजीज व्यंजन मौजूद थे. लेकिन. .... लेकिन क्या? घर वालो के साथ अन्य लोगों ने एक साथ पूछा. वहाँ शराब उपलब्ध नहीं थी और बगैर शराब के खातिरदारी कैसी?

यह कहने पर घरवालों के साथ ही अन्य लोग भी उन्हें देखते रह गये.

सुनील कुमार चौहान 'संघर्ष', बदायूँ

+++++++++++++++++++++

मँहगाई

आम आदमी खीझकर बोला-"कमबख्त! मँहगाई आजकल सिर चढ़कर बोल रही है."

सुनकर महँगाई आगबबूला होकर बोली-"ऐ जमीन पर पड़े आम आदमी! तू मुझे नहीं जानता, मैं किसकी बेटी हूँ? कण-कण व्याप्त बाहुबली भ्रष्टाचार की बेटी हूँ मैं. भविष्य में ऐसे शब्द जिहवा में ना लाना अन्यथा बोटी-बोटी नचवा दूँगी."

"जा-जा अपना रास्ता नाप, बहुत देखे तेरे जैसे, आजकल आसमान क्या छू रही है, जमीन पर पैर नहीं है नाशपीटी के.... अब भी इन हड्डियों में इतना दम है कि जी-तोड़ मेहनत से खूब उत्पादन कर तूझे जमीन पर पटक सकते है. बस इस बार भगवान हमारी सुन ले फसल अच्छी हो जाये..... फिर देख तू!"

"अरे! अरे! क्या क्या कर लेगा तू. तू जानता नहीं मेरे पति कौन है? तू चाहे कितना ही उत्पादन कर ले मेराा पति अपनी कूटनीति से सब ठिकाने लगा देगा."

सुनकर आम आदमी सहम गया और बोला-"देवी! मुझे मांफ कर दो मुझे पता नहीं था कि तुम नेता की अर्द्धांगिनी हो. हे! देवी तुम तो परमेश्वर से भी बड़ी हो हम तुम्हारे शरणांगत है. तुम ही कोई उपाय बताओ."

मँहगाई को आम आदमी पर दया आ गई. उसने कहा-"हे! भोले, आम आदमी! यह बता, मेरी दर तो मेरे पति तय करते हैं लेकिन उनकी कुर्सी कौन तय करता है?"

आम आदमी निरुत्तर होकर उस काले निशान को देखने लगा जो मतदान करते समय उसकी अँगुली में लगा था.

कैलाश चंद्र जोशी, औरैया, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++

दुनिया के रंग

चक्की चला रहे संतोष पाल से हमने कहा कि चाचा आपके पास कार, ट्रैक्टर, वी.सी.आर, मोटर साइकिल, कलर टेलिविजन, जनरेटर सहित सभी आधुनिक सुख सुविधायें थी.

आप किसी के समझाने से नहीं, माने सब कुछ शराब और जुएं में बरबाद कर दिया. अब चक्की चलाते हुए बड़ा कष्ट होता होगा.

इस पर संतोष पालने बड़े गर्व से जबाब दिया. अरे आदमी जिन्दगी का बार-बार मिली, देख तौलिएन दुनिया कें रंग।

नियम कानून

एक बार मैं सरकारी बस से यात्रा कर रहा था, बस चलने में थोड़ी देर थी. तो बस में लिखे हुए ट्रिटस पढ़ने लगा, एक सीट के ऊपर लिखा था वृद्धों के लिए आरक्षित.

उस सीट पर दो पुलिस के सिपाही बैठे थे, एक वृद्ध महाशय खड़े थे, तो हमने उन सिपाही से कहा भाई सीट खाली करिये, यह वृद्धों के लिए आरक्षित है, इन बूढ़े महाशय को बैठने दीजिए.

सिपाही ने कहा चुपबे साले हमें नियम कानून सिखाता है. कानून के रखवालों से ऐसी बात सुनकर मैं चुप हो गया.

संजय चतुर्वेदी, लखीमपुरखीरी,उ.प्र.

कृपया पत्रिका की प्रति मांगते वक्त वक्त ५ रुपये का टिकट साथ में भेजना न भूले. अन्यथा पत्रिका मुफ्त नहीं भेजी जाएगी

संपादक

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नामः आकांक्षा
संपादकः राजीव नामदेव मुल्यः५० रुपये
समीक्षकः वीरेन्द्र बहादुर खरे
प्रकाशनः म.प्र. लेखक संघ, टीकमगढ़

मध्य प्रदेश लेखक संघ की टीकमगढ़ शाखा के बैनर तले प्रकाशित अनियत कालीन पत्रिका आकांक्षा-३ को पढ़कर आश्चर्य एवं खुशी हुई. हवा और गंध की तरह साहित्यिक प्रतिभा भी सीमित न रहकर फैलने एवं विस्तृत होने की आकांक्षा रखती है. सच पूछो तो आकांक्षा मानव की सॉस लेने के बाद दूसरी प्राथमिकता है. यह आदमी की अलग पहचान बनाती है. आकांक्षा इंसान की अपनी सार्थकता सिद्ध करने की ललक है. श्री राना की संपादन कला एवं क्षमता दिखाने की आकांक्षा अस्वाभाविक नहीं है. उन्होंने आकाक्षा-३ को प्रकाशित कर अपनी क्षमता को प्रमाणित कर दिया है. दोष निकालने के लिए तो इसमें भी दोष देखे जा सकते है. ऐसा नहीं होना चाहिए, वैसा होना चाहिए, पर मेरा मन अंक को देखकर राना की पीठ ठौककर शाबासी देने का हो रहा है. उन्होंने टीकमगढ़ से एकाकी प्रयास से अपनी और अपने सहयोगी बंधुओं की आकांक्षा को साकार कर दिया. पत्रिका पुस्तकाकार है. रुप रंग में बहुत भव्य नहीं है. रंग विरंगे पृष्ठों से भी नहीं भरी है, बड़े नाम भी इस पत्रिका से नहीं जुड़े है, पर यह पत्रिका सुदर्शन है. सुरुचिपूर्ण है. इसकी रचनाएं समाज से सरोकार रखती, शील और मर्यादा की लक्ष्मण रेखा पार नहीं करती है.

पत्रिका का नामः यू.एस.एम मासिक
समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
मुल्यः २००/- रुपये
पताः ३६६५, न्यू कोट गांव (तेजाब मिल) जी.टी. रोड, गाजियाबाद-२०१००१

१९८४ से प्रकाशित एवं श्री उमाशंकर मिश्र द्वारा सम्पादित यू.एस.एम. पत्रिका ने साहित्यिक एवं समसामयिक विषयों पर केन्द्रित अनेकों विशेषांको निकाले है. पत्रिका ३० जून २००८ को अपने २४ वर्ष पूरे कर लेने के बाद यह अपने रजत जयंती वर्ष में प्रविष्ट हुई है. समीक्ष्य जून-जुलाई २००८ विशेषांक रजत जयंती वर्ष का प्रथम विशेषांक है. दो सौ बारह पृष्ठो का यह अंक बहुरंगी आवरण में लिपटी हुई ख्यातिलब्ध कवियों, कथाशिल्पियों, व्यंग्यकारों, निबन्धकारों की लेखनी से निसृत है. स्पष्टतः रुचिकर एवं स्तरीय है तो दूसरी तरह अचर्चित हस्ताक्षरों को भी मंच मिला है. ज्ञातव्य है कि विगत ३० जून को दिल्ली स्थित अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद भवन के सभागार में इसका लोकार्पण मॉरीशस के महामहिम उच्चायुक्त श्री मुकेश्वर चुन्नी के स्तर से सम्पन्न हुआ था.

रजत जयंती विशेषांक में माननीय उप-राष्ट्रपति समेत देश-विदेश की साहित्यिक एवं प्रशासनिक विभूतियों के शुभकामना संदेश है. ये विभूतियां देश के अनन्य क्षेत्रों से संबंधित है. इसमें सत्ताइस निबन्ध है, इकतालीस रचनाकारों की कतिवाये है, एक एकांकी 'नागफाश' पांच व्यंग्य रचनाओं तथा दस कहानियां साहित्यिक रुचि-सम्पन्न पाठकों को अवश्यक ही आह्लादित करेंगी, विभिन्न विधाओं के साम्प्रतिक तेवरों एवं रुझानों पर यथेष्ट प्रकाश भी डालेगी, इसमें किचिंतमात्र संदेह नही.

कथाशिल्पियों में उल्लेखनीय है सुश्री विभा देवसरे, सर्वश्री बलशौरि रेड्डी, कौशलेन्द्र पाण्डेय, अमरेन्द्र मिश्र, रामनारायण मिश्र, एन.एल.गोसाई तथा महेन्द्र प्रताप. विभाजी ने अपनी 'यह नियति नहीं' में साम्प्रतिक सामाजिक विद्रूपताओं को अपनी कहानी का विषय बनाया, शहरी जिन्दगी में, खासकर जब घर के सभी सदस्य नौकरीशुदा हों तब वरिष्ठ महिला को किन-किन जिम्मेदारियों को निपटाना पड़ता है, उनका लेखा जोखा सरल तथा सुंसम्प्रेषणीय शब्दावली में पाठक मन को जोड़ता है. कथा की मुख्य मात्र बुआ ने नारी और पुरुष के अन्तर को स्पष्ट किया है, 'पुरुष नारी का बलात्कार करने के बाद भी पाक-साफ बना रहता है जबकि नारी निर्दोष होते हुए भी चाहे या अनचाहे धब्बे को ढोते रहने में जीवन बिताती रहती है. संस्मरणात्मक ये कहानी उत्तम है, समाज के नेतृतव की दृष्टि देती है कि वह नारी के प्रति पुरुष की मानसिकता में बदलाव लाने के लिए कुछ करें. कौशलेन्द्र पाण्डेय की कहानी भी संस्मरणात्मक है तथा नारी की साम्प्रतिक के अतिरिक्त उसके भविष्य की भयावह चिन्ताओं की संवेदनात्मक दस्तावेज है. कथाशिल्पी के अनुसार नारी का सौन्दर्य जितना प्रकृति का वरदान है, उससे कहीं अधिक अभिशाप है उसके लिए. एक आदमखोर भेड़िये की खबर अखबार में पढ़कर कथा की प्रमुख पात्र व्यग्रता तिरकेवश कहती है-भेड़िया आदमी की तरह का रहा हो या पशु की तरह का, प्रश्न यह है कि वह बच्चों को ही क्यों खाता रहता है-कौमार्य की अनिश्चितकालीन गिरफ्त में बेबस युवतियों को क्यों बख्श देता है. इनके गोश्त में तो कहीं अधिक गर्मी होती है, प्रत्येक पुरुष नोच लेना चाहता है उनके पूरे शरीर को. भेड़ियें की दुर्दान्तता लांछनीय नहीं-वह तो पशु ही है, निरा पशु...! वह मुझ जैसी युवतियों को अपना ग्रास बनाकर सभी के जीवन की अनिश्चितता को निर्मूल कर सकता है.

'गेट नंबर चार' में रमपतिया का मृत्युपर्यन्त त्रासदी मय संवेदनाजन्य वृतांत है, समाज के आकाओं की नारी के प्रति

अनपेक्षित पशुता को बेनकाब भी करती है यह. 'आलोकित यात्री' पति के प्रति पत्नी की सहयोगी भूमिका यानि पारस्परिक समन्वय को रेखांकित करती है तो 'बहार आ गई' की प्रमुख स्त्री पात्र बहार जो अल्हड़, चपल और मधुस्वरी होने के साथ रुप सम्पदा की स्वामिनी है, अपने प्रियतम माधव से परिणय सूत्र में बॅधने के लिये उसके स्वावलम्बी होने की अवधि पूरी होने तक की प्रतीक्षा करती है. 'आलोकित यात्री' में पति के प्रति पत्नी की सहयोगी भूमिका यानि पारस्परिक समन्वय को रेखांकित करती है तो 'बहार आ गई' की प्रमुख स्त्री पात्र बहार जो अल्हड़, चपल और मधुस्वरी होने के साथ रुप सम्पदा की स्वामिनी है, अपने प्रियतम माधव से परिणय सूत्र में बॅधने के लिये उसके स्वावलम्बी होने की अवधि पूरी होने तक प्रतीक्षा करती है, यह कहानी न केवल विवाह योग्य पुत्री और उसके प्रेमी वरन दोनों के अभिभावकों को भी दृष्टि देती है कि बच्चों के सुखमय भविष्य के लिए वह उन्हें सहयोग करें 'जिजीविषा' की किस्सागोई में चित्रात्मका है, विनोद के चुटकुले इसे यशेष्ट रोचकता प्रदान करने में सक्षम है. कभी कभी वह गंभीर बातें भी करने लगता है. जीवन को संघर्ष संज्ञापित करते हुए कहता हूँ. वह कि इसमें सभी कुछ अच्छा घटित नहीं होता....मात्र यह कहानी है जो नारी की अबलाई से संस्यर्शित न होकर विनोद जैसे युवक पर केन्द्रित है जो डाक्टर के स्तर से प्रकट की गई हताशा के बावजूद जिन्दा भी रहना चाहता है. कुछ बनकर जीवन को सार्थकता भी प्रदान करना चाहता है. अंततः सफल भी होता है वह. इन्दु गुप्ता की लघुकथायें फर्क तथा तंत्र स्तरीय है.

नारी त्रासदी विषयक संदर्भित कहानियों में कथात्मकता तो है किन्तु 'डायरी के आइने से' को छोड़कर किसी में भी संवेदना की प्रभावी उपस्थिति नही है फिर भी पठनीय है. इन कथा रचनाओं ने संदर्भित रजत जयंती विशेषांक को बखूबी अलंकृत किया है, इसमें किचिंत्मात्र संदेह नहीं.

संपादक, विश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद

पुस्तक का नामःयह जग केवल स्वप्न असार
कवयित्रीः डॉ० श्रीमती तारा सिंह
समीक्षकः श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव

अब तक इन्टरनेट पर हिन्दी साहित्य के पन्ने कम ही है, और उनसे जुड़े गंभीर रचनाधर्मी भी. डॉ० तारा सिंह उनमें से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण नाम है. स्वर्ग विभा नामक इंटरनेट साहित्यिक ब्लोग वे समर्पित भाव से चला रही है. उनकी चौदहवीं काव्य कृति 'यह जग केवल स्वप्न असार', आद्योपान्त पढ़ने के बाद उनके नारी मन की भारतीय शाश्वत मूल्यों के प्रति आस्था, एवं तत्सम शब्दों में उनकी अभिव्यक्ति समझने का पाठकों को अवसर मिलता है। कवयित्री के पास विपुल शब्द भंडार है जिसका वे अत्यन्त दक्षता से उपयोग करती है-प्रथम रचना, भेज रहा हूँ निमंत्रण, से दो पंक्तियां उद्धृत है, जो डॉ० तारा सिंह की शब्द योजना को रेखांकित करती है-

'पीताभ अग्निमय अम्बर में, प्रलय हृदय भरता, इसलिए त्याग कर धरती के निष्ठुर जल का अवलम्ब उर्ध्व नभ के प्रकाश को आत्मसात कर उनके रुप, गंध, रस से झंकृत भूषण पहनकर यहॉ चली आओ' उनकी शैली गद्यमय है. तत्सम शब्दों का विपुल प्रयोग है. संस्कृतनिष्ठ भाषा है. वैचारिक परिपक्वता कविता का मूल आधार है. श्री कृष्ण मित्र ने इनकी कविताओं को छायावादी रचनाएॅ कहा है, वे बिल्कुल ठीक है. कवयित्री का भावपक्ष बहुत प्रबल है, उसके मन में राष्ट्रप्रेम की शाश्वत भावना हिलोरें मार रही हैं. वर्तमान सामाजिक परिदृश्य से पीड़ित वे लिखती है-

मैं ढूंढ रही हूँ भारत मॉ का ऐसा चित्र जिसमें
वर्णो से विभाजित, मानव की तकदीर न रहे।

कवयित्री समाज की नैतिक चारित्रिक गिरावट से दुखी है. नैतिकता भर रही चित्कार एवं ईमानदार दर-दर की ठोकरे खाता' इसी पीड़ा की रचनाएॅ है.

'फिर भी इसके गहरे तम में, डूब जा रहा संसार
जब कि यह जग है, केवल स्वप्न असार।

'दुनिया है एक धर्मशाला' रचना भी कुछ मनोभावों की पुष्टि करती हैं. उनके अनुभवों का संसार, उनके गॉव से प्रारम्भ होकर विश्व के कैनवास पर फैला है, एवं वे उसे समूचे ब्रहमाण्ड तक विस्तारित करने हेतु कलम का सहारा लेकर रचनाएं कर रही प्रतीत होती है. उनके भीतर की मूल नारी उसकी एक झलक से गूंज उठी कुटिया मेरी' जैसी रचना दिखती है. 'ऑसू से भीगें ऑचल पर जब कुछ धरना होगा' रचना की दो पंक्तियां है-

मातृपद को पाकर हमारी धरती कितनी पवित्र है
वहीं नारी मॉ बनकर भी कितनी कलुषित है।

स्त्री विमर्ष पर आज खूब रचना हो रही है, डॉ० तारा सिंह अगली ही पंक्यिों में इस समस्या का उत्तर देती है-

लेकिन मुझे विश्वास है, जिस दिन नारी
सोच लेगी, हमें कदर्प बनकर नहीं जीना है
नर-नारी एक ही युगपद की सग्याएॅ है
तब कमल-कंदर्प का यह भेद, आप मिट जाएगा।

कृति पठनीय एवं संग्रहणीय है. डॉ० तारा सिंह से हिन्दी जगत और भी श्रेयष्कर रचनाओं की आकांक्षा रखता है. विशेष रुप से इंटरनेट पर जो कार्य वे कर रही है, उसके लिए उन्हें पुनः बधाई.

सम्मानार्थ प्रविष्टिया आमंत्रित है

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित व अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी चर्चा की ओर अग्रसित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिककारों/पत्रकारों/समाजसेवियों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-

क्र.सं.	पुरस्कार का नाम	विवरण	राशि
१.	साहित्य श्री सम्मान	अप्रकाशित कहॉनी तीन प्रतियों में	रु०३१००.००
२.	डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मान	एक नाटक तीन प्रतियों में	रु०२१००.००
३.	बाल श्री सम्मान	एक बाल कविता तीन प्रतियों मे	रु०११००.००
४.	कैलाश गौतम सम्मान	कोई एक हास्य/व्यंग्य कविता तीन प्रतियों में	कोई नहीं
५.	डॉ.किशोरी लाल सम्मान	श्रृंगार रस पर आधारित एक रचना तीन प्रतियों में	"
६.	प्रवासी भारतीय सम्मान	ऐसे प्रवासी प्रवासीय जो हिंदी की सेवा कर रहे है. किसी भी विधा में एक रचना तीन प्रतियों में सम्पूर्ण विवरण	"
७.	अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान	ऐसे विदेशी अहिन्दी भाषी नागरिक जो हिंदी की किसी भी प्रकार से सेवा कर रहे है.	"
८.	राजभाषा सम्मान	सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारी जो अपने विभाग में हिंदी को बढ़ावा दे रहे है. सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	"
९.	सम्पादक श्री	हिंदी में प्रकाशित पत्र/पत्रिका की नवीनतम तीन अंक तीन प्रतियों में	
१०.	विधि श्री	ऐसे विधिवेत्ता जो विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे है या हिन्दी की सेवा कर रहे है.	
११.	डॉक्टरश्री	डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी को बढ़ावा देने वाले हिंदी सेवी.सम्पूर्ण विवरण सहित तीन प्रतियों में	
१२.	शिक्षक श्री	शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१३.	पुलिस हिंदी सेवा पदक	पुलिस सेवा में रहते हुए हिंदी को बढ़ावा देने वाले सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१४.	विज्ञान श्रीः	ऐसे विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है. सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१५.	युवा पत्रकारिता सम्मान	पत्रकारिता के क्षेत्र में गत पॉच वर्षो में किए गये कार्यो का सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१६.	राष्ट्रभाषा सम्मान	अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए/हिंदी सेवा के लिए, सम्पूर्ण विवरण सहित लिखें.	
१७.	विहिसा अलंकरण	लेख/संस्मरण/व्यंग्य/नाटक/उपन्यास तीन प्रतियों में	

मानद उपाधियों हेतु अलग से टिकट युक्त जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रविष्टि आवेदन पत्र

सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

विषयः.........................सम्मान हेतु प्रविष्टि।

संदर्भः
महोदय,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के ६वें साहित्य मेला में सम्मान हेतु मैं अपनी प्रविष्टि प्रेषित कर रहा हूँ. विवरण निम्नवत है-

रचना/पुस्तक का शीर्षकः ....
प्रेषित प्रतियाः............................ विधाः......................धनादेश/बैक ड्राफ्ट/डी.डी.का विवरणः राशि.................... बैंक का नामः...................... बैक ड्राफ्ट/डी.डी./चेक संख्याः.....................

मै शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूँ कि

१. प्रेषित रचना/पुस्तक मेरी मौलिक है.
२. मैंने संस्थान के पुरस्कार संबंधी नियम पढ़ लिए है और मैं उन्हें मान्य करता/करती हुं.

भवदीय

सलंग्नकः
१. सचित्र जीवन परिचय तीन प्रतियो में
२. टिकट लगा पता लगा लिफाफा
३. संबंधित रचना तीन प्रतियों में
४. बैक जमा पर्ची की छाया प्रति

हस्ताक्षर
पूरा नामः...........................
पताः.................................
....
दिनांकः.............................

पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, रचनाएं लौटायी नहीं जाएगी. रचनाओं की मौलिकता को दर्शाना जरुरी है. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. ये पुरस्कार इलाहाबाद में गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में प्रदान किये जायेंगे.

विशेषः **१.**सभी प्रविष्टियों के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा भेजें। **२.** प्रविष्टि के साथ २००/-रुपयें का धनादेश मनिआर्डर/बैकड्राफ्ट सचिव के नाम से भेजें. चेक सीधे अपने क्षेत्र के किसी युनियन बैक आफ इंडिया की शाखा में जमा कर छाया प्रति भेजें. ३. संस्था के युनियन बैंक ऑफ इंडिया के **खाता सं.** 538702010009259 में भी जमा कर रसीद की छाया प्रति संस्था को भेज सकते है. ४. सम्मान योजना शामिल सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता व विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की साधारण सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो दिसम्बर २००८ से लागू होगी. **५.** प्रविष्ट्रियों के साथ सचित्र स्वविवरणीका अवश्य भेजें. **६.** धनादेश को अंतिम विकल्प में रक्खें. **७.** प्रत्येक प्रविष्ट्रि हेतु रचना, विवरण तीन प्रतियों में भेजना अनिवार्य है. **८.** किसी अन्य प्रकार की जानकारी के लिए लिखें/ईमेल करें/देखें.

अंतिम तिथिः १५ नवम्बर २००८

कार्यालयः एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
dkuQkbu%09335155949 इमेलः Sahityaseva@rediffmail.com, **Website:** www.swargvibha.tk

प्रस्ताव आमंत्रित है

सम्मानित प्राधानाचार्य/प्राचार्य

महोदय,

हिंदी के विकास के लिए पूर्ण रुपेण सक्रिय विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद अपने कार्य क्षेत्र को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष से प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है. इसमें आपसे आपके विद्यालय /महाविद्यालय में वर्ष २००८ की परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों के अंक पत्र, उनका नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल १५ जनवरी २००६ तक आमंत्रित करता है. सम्मान समारोह फरवरी ०६ में प्रस्तावित है. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. आशा है आप हमारे आग्रह को स्वीकार कर अपना प्रस्ताव हमें शीघ्र भेजने का कष्ट करें. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में प्रमाण-पत्र, अंगवस्त्रम, कुछ नगद राशि जिसका निर्धारण बाद में किया जाएगा, कुछ उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी.

अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर प्रेषित करें:

सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: gpfsociety@rediffmail.com,sahityaseva@rediffmail.com
Mo.: 09335155949, 09935174869

क्या आप चाहते हैं कि आपका बच्चा कोई अपराधी न बनें.

क्या आप चाहते हैं कि आपका ओजस्वी बच्चा आरक्षण का शिकार न बनें तो पढ़िए

आरक्षण, जातिवाद और नारी शोषण के खिलाफ जबरदस्त आवाज बुलंद करने वाला हर युवा के दिल की आवाज, हर नारी के मन की सोच को उजागर करने वाला **गोकुलेश्वर कुमार 'राही अलबेला'**का

लघु उपन्यास

रोड इंस्पेक्टर

कीमत 20 रुपये

अपनी प्रतियां बुक करायें, और हजारों के ईनाम पाए

अपनी प्रति अभी सुरक्षित करा लें. कहीं देर ना हो जाए..............

आप अपनी प्रति पोस्ट आफिस और बैंक चार्जेज से बचने के लिए यूनियन बैंक की किसी शाखा सें खाता संख्या: 538702010009259 जमा कर अपनी रसीद की कापी अपने पते के साथ कार्यालय को भेज देवें अथवा मनिआर्डर/बैक डाफ्ट. भेजें. चेक स्वीकार्य नही होगा. प्रत्येक बुकिंग का एक नंबर है, उनमें से कुछ नंबर ईनामी है.

लिखें: **प्रसार सचिव,**

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

एक कप चाय

क्या आप चाहते है?

कि आपका एक कप चाय का दाम किसी वृद्ध को दो वक्त की रोटी दे सके

किसी असहाय वृद्ध को सहारा दे सके?

किसी अनाथ की जिंदगी संवार सके

किसी अंधे को सहारा दे सके

किसी अनाथ को शिक्षा दे सके?

किसी असहाय महिला के तन को ढंग सके.

तो फिर देर किस बात की

आज से ही प्रतिदिन सिर्फ एक काप चाय बचाना शुरु कर दीजिए. अपनी यह बचत आप मासिक/छमाही/वार्षिक स्नेहाश्रम को भेज सकते हैं. अपना सहयोग विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से धनादेश/डी.डी./बैंक ड्राफ्ट/चेक भेज सकते हैं अथवा संस्था के यूनियन बैंक ऑफ इडिया की किसी शाखा में खाता संख्या 538702010009259 में जमा कर डी.डी./बैंक ड्राफ्ट/चेक/नगद की छाया प्रति संस्था के कार्यालय में भेज सकते है.

लिखें: संचालक

स्नेहाश्रम

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद,उ.प्र., कानाफुसीः ०६३३५१५५६४६

email: sahityaseva@rediffmail.com

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93,नीम सराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. आर.एन.आई यूपीहिन्दी2001/8380 डाकपंजी.सं0: एडी.306/2006–08 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी